

رَأْسُ مَنْ أَنْفِسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ

लाए तुम में से वोह रसूल³⁰⁷ जिन पर तुम्हारा मशक्कत में पड़ना गिरा है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले

بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٧٨﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللهُ

मुसल्मानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान³⁰⁸ फिर अगर वोह मुंह फेरें³⁰⁹ तो तुम फरमा दो कि मुझे **अल्लाह** काफी है

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٧٩﴾

उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अर्श का मालिक है³¹⁰

﴿آيَاتُهَا ۱۰۹﴾ ﴿سُورَةُ يُونُسَ مَكِّيَّةٌ ۵﴾ ﴿رُكُوعَاتُهَا ۱۱﴾

सूरए यूनुस मक्किय्या है इस में एक सो नव आयतें और ग्यारह रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

الرَّ كِتَابٌ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿١﴾ أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا

येह हिकमत वाली किताब की आयतें हैं क्या लोगों को इस का अचम्भा (तअज्जुब) हुवा कि हम ने उन में से

إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ أَنْ أَنْذِرَ النَّاسَ وَبَشِّرَ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ

एक मर्द को वहुय भेजी कि लोगों को डर सुनाओ² और ईमान वालों को खुश खबरी दो कि उन के लिये

قَدَمَ صَدَقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ط قَالَ الْكٰفِرُونَ إِنَّ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾

उन के रब के पास सच का मकाम है काफिर बोले बेशक येह तो खुला जादूगर है³

307 : मुहम्मद मुस्तफा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ अरबी कुरशी जिन के हसब व नसब को तुम खूब पहचानते हो कि तुम में सब से आली नसब हैं और तुम उन के सिदक़ो अमानत, जोहदो तक्वा, तहारतो तक्हुस और अख्लाक़े हमीदा को भी खूब जानते हो और एक किराअत में "أَنْفُسِكُمْ" ब फह "ف" आया है, इस के मा'ना हैं कि तुम में सब से नफीस तर और अशरफ़े अफज़ल। इस आयते करीमा में सथियेद आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की तशरीफ़ आवरी या'नी आप के मीलादे मुबारक का बयान है। तिरमिज़ी की हदीस से भी साबित है कि सथियेद आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने अपनी पैदाइश का बयान कियाम कर के फरमाया। **मसअला** : इस से मा'लूम हुवा कि महफ़िले मीलादे मुबारक की अस्त कुरआनो हदीस से साबित है। **308** : इस आयत में **अल्लाह** तबारक व तआला ने अपने हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को अपने दो नामों से मुशरफ़ फरमाया, येह कमाले तकरीम है इस सरवरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की **309** : या'नी मुनाफ़िक्कीन व कुफ़फ़ार आप पर ईमान लाने से ए'राज करे **310** : हाकिम ने मुस्तदरक में उबय इब्ने का'ब से एक हदीस रिवायत की है कि "لَقَدْ جَاءَكُمْ" से आख़िर सूरत तक दोनों आयतें कुरआने करीम में सब के बा'द नाज़िल हुईं। **1** : सूरए यूनुस मक्किय्या है सिवाए तीन आयतों के "فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللهُ" से। इस में ग्यारह रुकूअ और एक सो नव आयतें और एक हज़ार आठ सो बत्तीस कलिमे और नव हज़ार निनानवे हर्फ़ हैं। **2** शाने नुज़ूल : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फरमाया जब **अल्लाह** तबारक व तआला ने सथियेद आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को रिसालत से मुशरफ़ फरमाया और आप ने इस का इज़हार किया तो अरब मुन्किर हो गए और उन में से बा'जों ने येह कहा कि **अल्लाह** इस से बरतर है कि किसी बशर को रसूल बनाए। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **3** : कुफ़फ़ार ने पहले तो बशर का रसूल होना काबिले तअज्जुब व इन्कार करार दिया और फिर जब हज़ूर के मो'जिज़ात

إِنَّ رَبَّكُمْ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ

बेशक तुम्हारा रब **अल्लाह** है जिस ने आस्मान और ज़मीन छ⁶ दिन में बनाए फिर

اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۗ مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ

अर्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है काम की तदबीर फ़रमाता है⁴ कोई सिफ़ारशी नहीं मगर उस की इजाज़त

إِذْنِهِ ۗ ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣﴾ إِلَيْهِ

के बा'द⁵ यह है **अल्लाह** तुम्हारा रब⁶ तो उस की बन्दगी करो तो क्या तुम ध्यान नहीं करते उसी की तरफ़

مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۗ وَعَدَّ اللَّهُ حَقًّا ۗ إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ

तुम सब को फिरना है⁷ **अल्लाह** का सच्चा वा'दा बेशक वोह पहली बार बनाता है फिर फ़ना के बा'द दोबारा बनाएगा

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۗ وَالَّذِينَ

कि उन को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये इन्साफ़ का सिला दे⁸ और काफ़ि़रों

كَفَرُوا وَاللَّهُمْ شَرَّابٌ مِّنْ حَيْمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٤﴾ هُوَ

के लिये पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अज़ाब बदला उन के कुफ़्र का वोही

الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا

है जिस ने सूरज को जगमगाता बनाया और चांद चमकता और इस के लिये मन्ज़िलें ठहराई⁹ कि तुम

عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابِ ۗ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ يُفَصِّلُ

बरसों की गिनती और¹⁰ हिसाब जानो **अल्लाह** ने इसे न बनाया मगर हक़¹¹ निशानियां

देखे और यकीन हुवा कि ये बशर के मक्दरत (इन्सान की ताक़त) से बालातर हैं तो आप को साहिर (जादूगर) बताया, उन का ये दा'वा तो किज़्ब व बातिल है मगर इस में भी हुज़ूर के क़माल और अपने इज़्ज का ए'तिराफ़ पाया जाता है । 4 : या'नी तमाम खल्क के उमूर का हस्बे इक़तज़ाए हिक़मत सर अन्जाम फ़रमाता है । 5 : इस में बुत परस्तों के इस कौल का रद है कि बुत उन की शफ़ाअत करेंगे, उन्हें बताया गया कि "शफ़ाअत" माज़ूनीन (इजाज़त याफ़ता) के सिवा कोई नहीं करेगा और माज़ून सिर्फ़ उस के मक्बूल बन्दे होंगे । 6 : जो आस्मान व ज़मीन का ख़ालिक़ और तमाम उमूर का मुदब्बिर है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं फ़क़त वोही मुस्तहिक़े इबादत है । 7 : रोज़े क़ियामत और येही है 8 : इस आयत में हश्ये नशर व मआद का बयान और मुन्क़रीन का रद है और इस पर निहायत लतीफ़ पैराए में दलील काइम फ़रमाई गई है कि वोह पहली बार बनाता है और आ'जाए मुक्क़बा को पैदा करता है और तरकीब देता है तो मौत के साथ मुतफ़रि़क़ व मुन्तशिर होने के बा'द उन को दोबारा फिर तरकीब देना और बने हुए इन्सान को फ़ना के बा'द फिर दोबारा बना देना और वोही जान जो उस के बदन से मुतअल्लिक़ थी उस को उस बदन की दुरुस्ती के बा'द फिर उसी बदन से मुतअल्लिक़ कर देना उस की कुदरत से क्या बईद है और इस दोबारा पैदा करने का मक्सूद जज़ाए आ'माल या'नी मुतीअ को सवाब और आसी (ना फ़रमान) को अज़ाब देना है । 9 : अज़्ज़ईस मन्ज़िलें जो बारह बुर्जे पर मुन्क़सिम हैं हर बुर्ज के लिये 2³ मन्ज़िलें हैं, चांद हर शब एक मन्ज़िल में रहता है और महीना तीस दिन का हो तो दो शब, वरना एक शब छुपता है । 10 : महीनों, दिनों, साअतों का 11 : कि इस से उस की कुदरत और उस की वहदानिय्यत के दलाइल ज़ाहिर हों ।

الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥﴾ إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ

मुफ़्तसल बयान फ़रमाता है इल्म वालों के लिये¹² बेशक रात और दिन का बदलता आना और जो कुछ

اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يُتَّقُونَ ﴿٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا

अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन में पैदा किया उन में निशानियां हैं डर वालों के लिये बेशक वोह जो

يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَأَوْا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنَّنُوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ

हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते¹³ और दुनिया की ज़िन्दगी पसन्द कर बैठे और इस पर मुत्मइन हो गए¹⁴ और वोह जो

عَنْ آيَاتِنَا غَفُلُونَ ﴿٧﴾ أُولَئِكَ مَا لَهُمْ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨﴾

हमारी आयतों से ग़फ़लत करते हैं¹⁵ उन लोगों का ठिकाना दोज़ख़ है बदला उन की कमाई का

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيُهُمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ ﴿٩﴾

बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन का रब उन के ईमान के सबब उन्हें राह देगा¹⁶

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٩﴾ دَعْوَاهُمْ فِيهَا

उन के नीचे नहरें बहती होंगी ने'मत के बागों में उन की दुआ उस में येह होगी कि

سُبْحٰنَكَ اللَّهُمَّ وَتَجِيبُهُمْ فِيهَا سَلٰمٌ ﴿١٠﴾ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ

अल्लाह तुझे पाकी है¹⁷ और उन के मिलते वक़्त खुशी का पहला बोल सलाम है¹⁸ और उन की दुआ का ख़ातिमा येह है कि सब ख़ुबियों सराहा (ख़ुबियों वाला)

لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠﴾ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ

अल्लाह जो रब है सारे जहान का¹⁹ और अगर अल्लाह लोगों पर बुराई ऐसी जल्द भेजता जैसी वोह भलाई की

12 : कि इन में गौर कर के नफ़अ उठाएं। 13 : रोजे क़ियामत और सवाब व अज़ाब के काइल नहीं। 14 : और इस फ़ानी (दुनिया) को जाविदानी (हमेशा बाकी रहने वाली आख़िरत) पर तरजीह दी और उज़्र इस की त़लब में गुज़ारी। 15 : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنهما से मरवी है कि यहां आयात से सथियदे आलम عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की जाते पाक और कुरआन शरीफ़ मुराद है और ग़फ़लत करने से मुराद इन से ए'राज़ करना है। 16 : जन्तों की तरफ़। क़तादा का कौल है कि मोमिन जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उस का अमल ख़ूब सूत शक़ल में उस के सामने आएगा। येह शख़्स कहेगा : तू कौन है ? वोह कहेगा : मैं तेरा अमल हूँ और उस के लिये नूर होगा और जन्त तक पहुंचाएगा और काफ़िर का मुआमला बर अक्स होगा कि उस का अमल बुरी शक़ल में नुमूदार हो कर उसे जहन्नम पहुंचाएगा। 17 : या'नी अहले जन्त اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ तआला की तस्बीह, तह्मीद, तक्दीस में मशगूल रहेंगे और उस के ज़िक्र से उन्हें फ़रहत व सुरूर और इन्तिहा दरजे की लज़ज़त हासिल होगी, سُبْحٰنَكَ اللَّهُ। 18 : या'नी अहले जन्त आपस में एक दूसरे की तहिय्यत व तकरीम (ता'ज़ीम) सलाम से करेंगे या मलाएका उन्हें बतौर तहिय्यत सलाम अर्ज़ करेंगे या मलाएका रब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से उन के पास सलाम लाएंगे। 19 : उन के कलाम की इब्बिदा اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ की ता'ज़ीम व तन्ज़ीह (पाकी) से होगी और कलाम का इख़िताम उस की हम्दो सना पर होगा।

بِالْخَيْرِ لَقَضَى إِلَيْهِمْ أَجَلَهُمْ ۖ فَذُرُّوا الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا

जल्दी करते हैं तो उन का वा'दा पूरा हो चुका होता²⁰ तो हम छोड़ते उन्हें जो हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते

فِي طُعْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنبِهِ أَوْ

कि अपनी सरकशी में भटका करें²¹ और जब आदमी को²² तकलीफ़ पहुंचती है हमें पुकारता है लैटे और

قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَانُ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ

बैठे और खड़े²³ फिर जब हम उस की तकलीफ़ दूर कर देते हैं चल देता है²⁴ गया कभी किसी तकलीफ़ के

ضُرِّمَسَّهُ ۖ كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَلَقَدْ

पहुंचने पर हमें पुकारा ही न था यूँही भले कर दिखाए हैं हृद से बढ़ने वालों को²⁵ उन के काम²⁶ और बेशक

أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۖ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

हम ने तुम से पहली संगतें²⁷ हलाक फ़रमा दीं जब वोह हृद से बढ़े²⁸ और उन के रसूल उन के पास

بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا يَوْمِنُوا ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْجَرِيمِينَ ۝ ١٣

रोशन दलीलें ले कर आए²⁹ और वोह ऐसे थे ही नहीं कि ईमान लाते हम यूँही बदला देते हैं मुजरिमों को

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلِيفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝ ١٣

फिर हम ने उन के बा'द तुम्हें ज़मीन में जा नशीन किया कि देखें तुम कैसे काम करते हो³⁰

20 : या'नी अगर **अब्लुस** तआला लोगों की बद दुआएं जैसे कि वोह गुज़ब के वक़्त अपने लिये और अपने अहल व औलाद व माल के लिये करते हैं और कहते हैं हम हलाक हो जाएं, खुदा हमें गारत करे, बरबाद करे और ऐसे कलिमे ही अपनी औलाद व अकारिब के लिये कह गुज़रते हैं जिसे हिन्दी में कोसना कहते हैं अगर वोह दुआ ऐसी जल्दी कबूल कर ली जाती जैसी जल्दी वोह दुआएं खैर के कबूल होने में चाहते हैं तो उन लोगों का खातिमा हो चुका होता और वोह कब के हलाक हो गए होते लेकिन **अब्लुस** तबारक व तआला अपने करम से दुआएं खैर कबूल फ़रमाने में जल्दी करता है, दुआएं बद के कबूल में नहीं, येह उस की रहमत है। शाने नुज़ूल : नज़्र बिन हारिस ने कहा था : या रब ! येह दीने इस्लाम अगर तेरे नज़दीक हक़ है तो हमारे ऊपर आस्मान से पथर बरसा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि अगर **अब्लुस** तआला काफ़िरों के लिये अज़ाब में जल्दी फ़रमाता जैसा कि उन के लिये माल व औलाद वगैरा दुन्या की भलाई देने में जल्दी फ़रमाई तो वोह सब हलाक हो चुके होते। 21 : और हम उन्हें मोहलत देते हैं और उन के अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाते। 22 : यहां आदमी से काफ़िर मुराद है। 23 : हर हाल में और जब तक उस की तकलीफ़ जाइल न हो दुआ में मशगूल रहता है। 24 : अपने पहले तरीके पर और वोही कुफ़्र की राह इख़्तियार करता है और तकलीफ़ के वक़्त को भूल जाता है। 25 : या'नी काफ़िरों को 26 : मक्सद येह है कि इन्सान बला के वक़्त बहुत ही बे सब्रा है और राहत के वक़्त निहायत नाशुक्रा, जब तकलीफ़ पहुंचती है तो खड़े, लैटे, बैठे हर हाल में दुआ करता है, जब **अब्लुस** तकलीफ़ दूर कर दे तो शुक्र बजा नहीं लाता और अपनी हालते साबिका की तरफ़ लौट जाता है, येह हाल गाफ़िल का है, मोमिने आक़िल का हाल इस के खिलाफ़ है, वोह मुसीबत व बला पर सब्र करता है, राहतो आसाइश में शुक्र करता है, तकलीफ़ व राहत के जुम्ला अहवाल में **अब्लुस** तआला के हज़ूर तज़रोंअ (गिया) व जारी और दुआ करता है और एक मक़ाम इस से भी आ'ला है जो मोमिनों में भी मख़सूस बन्दों को हासिल है कि जब कोई मुसीबत व बला आती है उस पर सब्र करते हैं, क़ुआए इलाही पर दिल से राजी रहते हैं और जमीअ अहवाल पर शुक्र करते हैं। 27 : या'नी उम्मतें 28 : और कुफ़्र में मुबला हुए। 29 : जो उन के सिद्क की बहुत वाज़ेह दलीलें थीं लेकिन उन्हें ने न माना और अम्बिया की तस्दीक़ न की। 30 : ताकि तुम्हारे साथ तुम्हारे अमल के लाइक मुआमला

وَإِذْ أَنْتَلَى عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ ۗ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا

और जब उन पर हमारी रोशन आयतें³¹ पढ़ी जाती हैं वोह कहने लगते हैं जिन्हें हम से मिलने की उम्मीद नहीं³² कि

أَنْتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا أَوْ بَدِّلْهُ ۗ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِنْ

इस के सिवा और कुरआन ले आइये³³ या इसी को बदल दीजिये³⁴ तुम फ़रमाओ मुझे नहीं पहुंचता कि मैं इसे अपनी तरफ़

تِلْقَائِي نَفْسِي ۚ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۚ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ

से बदल दूं मैं तो उसी का ताबेअ हूं जो मेरी तरफ़ वहय होती है³⁵ मैं अगर अपने रब की ना फ़रमानी करूँ³⁶

رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ ١٥ قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا

तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है³⁷ तुम फ़रमाओ अगर **अल्लाह** चाहता तो मैं इसे तुम पर न पढ़ता न वोह

أَدْرَاكُمْ بِهِ ۗ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهِ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ ١٦

तुम को इस से खबरदार करता³⁸ तो मैं इस से पहले तुम में अपनी एक उम्र गुज़ार चुका हूँ³⁹ तो क्या तुम्हें अक़ल नहीं⁴⁰

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا

तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे⁴¹ या उस की आयतें झुटलाए बेशक

يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ۝ ١٧ وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا

मुजरिमों का भला न होगा और **अल्लाह** के सिवा ऐसी चीज़⁴² को पूजते हैं जो उन का न कुछ नुकसान करे और न

फ़रमाएं **31** : जिन में हमारी तौहीद और बुत परस्ती की बुराई और बुत परस्तों की सज़ा का बयान है। **32** : और आखिरत पर ईमान नहीं

रखते। **33** : जिस में बुतों की बुराई न हो। **34 शाने नुज़ूल** : कुफ़र की एक जमाअत ने नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की खिदमत में हाज़िर

हो कर कहा कि अगर आप चाहते हैं कि हम आप पर ईमान ले आए तो आप इस कुरआन के सिवा दूसरा कुरआन लाइये ! जिस में लात व

उज़्ज़ा व मनात वगैरा बुतों की बुराई और इन की इबादत छोड़ने का हुकम न हो और अगर **अल्लाह** ऐसा कुरआन नाज़िल न करे तो आप

अपनी तरफ़ से बना लीजिये या इसी कुरआन को बदल कर हमारी मरज़ी के मुताबिक़ कर दीजिये तो हम ईमान ले आएंगे। उन का येह कलाम

या तो ब तरीके तमस्खुर व इस्तिहज़ा था या उन्होंने ने तजरिबा व इम्तिहान के लिये ऐसा कहा था कि अगर येह दूसरा कुरआन बना लाएं या

इस को बदल दें तो साबित हो जाएगा कि कुरआन कलामे रब्बानी नहीं है। **अल्लाह** तअ़ाला ने अपने हबीब **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को हुकम दिया

कि इस का येह जवाब दें जो आयत में मज़हूर होता है : **35** : मैं इस में कोई त़यीर व तब्दील कमी बेशी नहीं कर सकता, येह मेरा कलाम नहीं

कलामे इलाही है। **36** : या उस की किताब के अहकाम को बदलूं **37** : और दूसरा कुरआन बनाना इन्सान की मक्दिरत (ताक़त) ही से बाहर

है और खलक़ का इस से अज़िज़ होना खूब ज़ाहिर हो चुका। **38** : या'नी इस की तिलावत महज़ **अल्लाह** की मरज़ी से है। **39** : और

चालीस साल तुम में रहा हूं, इस ज़माने में मैं तुम्हारे पास कुछ नहीं लाया और मैं ने तुम्हें कुछ नहीं सुनाया तुम ने मेरे अहवाल का खूब मुशाहदा

किया है, मैं ने किसी से एक हर्फ़ नहीं पढ़ा, किसी किताब का मुतालआ न किया, इस के बा'द येह किताबे अज़ीम लाया जिस के हुज़ूर हर एक

कलामे फ़सीह पस्त और बे हकीक़त हो गया, इस किताब में नफ़ीस उलूम हैं, उसूल व फ़रूअ का बयान है, अहकाम व आदाब हैं, मकारिमे

अख़लाक़ की ता'लीम है, ग़ैबी ख़बरे हैं, इस की फ़साहतो बलाग़त ने मुल्क भर के फ़सहा व बुलगा को अज़िज़ कर दिया है, हर साहिबे अक़ले

सलीम के लिये येह बात अज़र मिनशशम्स (सूरज से ज़ियादा रोशन) हो गई है कि येह बिगैर वह्ये इलाही के मुम्किन ही नहीं। **40** : कि इतना समझ

सके कि येह कुरआन **अल्लाह** की तरफ़ से है मख़लूक़ की कुदरत में नहीं कि इस की मिस्तल बना सके **41** : उस के लिये शरीक़ बताए **42** : बुत।

يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شَفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۖ قُلْ أَتَسْتَعِينُونَ اللَّهَ

कुछ भला और कहते हैं कि यह अब्बाह के यहां हमारे सिफारिशी हैं⁴³ तुम फ़रमाओ क्या अब्बाह को वोह बात जताते हो

بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالٰى عَمَّا

जो उस के इल्म में न आस्मानों में है न ज़मीन में⁴⁴ उसे पाकी और बरतरी है उन के

يُشْرِكُونَ ۝١٨ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۗ وَلَوْلَا

शिक से और लोग एक ही उम्मत थे⁴⁵ फिर मुखलिफ़ हुए और अगर तेरे

كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ فَيَسْأَلُ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝١٩

रब की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती⁴⁶ तो यहीं उन के इख़िलाफ़ों का उन पर फैसला हो गया होता⁴⁷

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۗ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ

और कहते हैं उन पर उन के रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी⁴⁸ तुम फ़रमाओ ग़ैब तो अब्बाह के लिये है

43 : या'नी दुन्यवी उमूर में क्यूं कि आखिरत और मरने के बा'द उठने का तो वोह ए'तिकाद ही नहीं रखते । 44 : या'नी उस का वुजूद ही नहीं क्यूं कि जो चीज़ मौजूद है वोह जरूर इल्मे इलाही में है । 45 : एक दिने इस्लाम पर जैसा कि जमाने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام में काबील के हाबील को कत्ल करने के वक़्त तक हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और उन की जुरिय्यत एक ही दिन पर थे इस के बा'द उन में इख़िलाफ़ हुवा, और एक कौल येह है कि जमाने नूह عَلَيْهِ السَّلَام तक एक दिन पर रहे फिर इख़िलाफ़ हुवा तो नूह عَلَيْهِ السَّلَام मबऊस फ़रमाए गए । एक कौल येह है कि हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के कश्ती से उतरने के वक़्त सब लोग एक दिने इस्लाम पर थे । एक कौल येह है कि अहदे हज़रते इब्राहीम से सब लोग एक दिन पर थे यहां तक कि अम्र बिन लुहय्य ने दिन को मुतगय्यर किया । इस तक्दीर पर "النَّاسُ" से मुराद खास अरब होंगे । एक कौल येह है कि लोग एक दिन पर थे या'नी कुफ़र पर फिर अब्बाह तआला ने अम्बिया को भेजा तो बा'ज उन में से ईमान लाए और बा'ज उलमाने कहा कि मा'ना येह हैं कि लोग अव्वले ख़िल्कत में फ़ितरते सलीमा पर थे फिर इन में इख़िलाफ़ात हुए । हदीस शरीफ़ में है हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है फिर उस के मां बाप उस को यहूदी बनाते हैं या नसरानी बनाते हैं या मजूसी बनाते हैं और हदीस में फ़ितरत से फ़ितरते इस्लाम मुराद है । 46 : और हर उम्मत के लिये एक मीआद मुअय्यन न कर दी गई होती या जज़ाए आ'माल क़ियामत तक मुअख़्ख़र न फ़रमाई गई होती 47 : नुजूले अज़ाब से । 48 : अहले बातिल का तरीका है कि जब उन के ख़िलाफ़ बुरहाने क़वी काइम होती है और वोह जवाब से आजिज़ हो जाते हैं तो उस बुरहान का जिक्क इस तरह छोड़ देते हैं जैसे कि वोह पेश ही नहीं हुई और येह कहा करते हैं कि दलील लाओ ताकि सुनने वाले इस मुग़ालते में पड़ जाए कि इन के मुकाबिल अब तक कोई दलील ही नहीं काइम की गई है, इस तरह कुफ़फ़ार ने हुज़ूर के मो'जिज़ात और बिल खुसूस कुरआने करीम जो मो'जिज़ाए अज़ीमा है इस की तरफ़ से आंखें बन्द कर के येह कहना शुरूअ किया कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी गोया कि मो'जिज़ात उन्हां ने देखे ही नहीं और कुरआने पाक को वोह निशानी शुमार ही नहीं करते । अब्बाह तआला ने अपने रसूल صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से फ़रमाया कि आप फ़रमा दीजिये कि ग़ैब तो अब्बाह के लिये है अब रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूं । तक्रीर जवाब येह है कि दलालते काहिरा (जबर दस्त दलील) इस पर काइम है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर कुरआने पाक का ज़ाहिर होना बहुत ही अज़ीमुशान मो'जिज़ा है क्यूं कि हुज़ूर उन में पैदा हुए, उन के दरमियान हुज़ूर बढ़े, तमाम ज़माने हुज़ूर के उन की आंखों के सामने गुजरे, वोह खूब जानते हैं कि आप ने न किसी किताब का मुतालआ किया, न किसी उस्ताद की शागिर्दी की, यकबारगी कुरआने करीम आप पर ज़ाहिर हुवा और ऐसी बे मिसाल आ'ला तरीन किताब का ऐसी शान के साथ नुजूल बिग़ैर वह्य के मुम्किन ही नहीं, येह कुरआने करीम के मो'जिज़ाए काहिरा होने की बुरहान है और जब ऐसी क़वी बुरहान काइम है तो इस्बाते नुबुव्वत के लिये किसी दूसरी निशानी का त़लब करना क़त्अन ग़ैर ज़रूरी है, ऐसी हालत में इस निशानी का नाज़िल करना न करना अब्बाह तआला की मशिय्यत पर है चाहे करे चाहे न करे तो येह अम्र ग़ैब हुवा और इस के लिये इन्तिज़ार लाज़िम आया कि अब्बाह क्या करता है । लेकिन वोह येह ग़ैर ज़रूरी निशानी जो कुफ़फ़ार ने त़लब की है नाज़िल फ़रमाए या न फ़रमाए नुबुव्वत साबित हो चुकी और रिसालत का सुबूते काहिरा मो'जिज़ात से कमाल को पहुंच चुका ।

فَاتَّظَرُوا إِلَىٰ إِيَّايَ مَعَكُمْ مِنَ الْمُتَظَرِّينَ ۚ وَإِذَا آذَقْنَا النَّاسَ

अब रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूँ और जब हम आदमियों को रहमत का

رَاحَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَّسَّتْهُمْ إِذَا هُمْ مَكْرُفِي آيَاتِنَا قُلِ اللَّهُ

मज़ा देते हैं किसी तकलीफ़ के बाद जो उन्हें पहुंची थी जभी वोह हमारी आयतों के साथ दाउं चलते हैं⁴⁹ तुम फ़रमा दो **اللَّهُ** की खुफ़या तदबीर

أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَكْرُونَ ۚ هُوَ الَّذِي

सब से जल्द हो जाती है⁵⁰ बेशक हमारे फिरिश्ते तुम्हारे मक़ लिख रहे हैं⁵¹ वोही है कि

يَسِيرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ وَجَرَيْنَ بِهِمْ

तुम्हें खुशकी और तरी में चलाता है⁵² यहां तक कि जब तुम कश्ती में हो और वोह⁵³ अच्छी हवा

بَرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ

से उन्हें ले कर चलें और इस पर खुश हुए⁵⁴ उन पर आंधी का झोंका आया और हर तरफ़ लहरों

مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۚ دَعَا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ

ने उन्हें आ लिया और समझ लिये कि हम घिर गए उस वक़्त **اللَّهُ** को पुकारते हैं निरे (ख़ालिस) उस के

الَّذِينَ ۚ لَئِنِ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۚ فَلَمَّا

बन्दे हो कर कि अगर तू इस से हमें बचा लेगा तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ार होंगे⁵⁵ फिर **اللَّهُ** जब

أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا

उन्हें बचा लेता है जभी वोह ज़मीन में नाहक़ ज़ियादती करने लगते हैं⁵⁶ ऐ लोगो

بَغَيْكُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ ۚ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ

तुम्हारी ज़ियादती तुम्हारी ही जानों का वबाल है दुन्या के जीते जी बरत लो (फ़ाएदा उठा लो) फिर तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना है

49 : अहले मक्का पर **اللَّهُ** तआला ने क़हत मुसल्लत किया जिस की मुसीबत में वोह सात बरस गिरिफ़्तार रहे यहां तक कि क़रीब हलाकत के पहुंचे फिर उस ने रहम फ़रमाया, बारिश हुई, ज़मीनों सर सब्ज हुई तो अगर्चे इस तकलीफ़ व राहत दोनों में कुदरत की निशानियां थीं और तकलीफ़ के बाद राहत बड़ी अज़ीम ने'मत थी, इस पर शुक्र लाज़िम था मगर बजाए इस के वोह पन्द पज़ीर (नसीहत कबूल करने वाले) न हुए और फ़साद व कुफ़्र की तरफ़ पलटे 50 : और उस का अज़ाब देर नहीं करता 51 : और तुम्हारी खुफ़या तदबीरों कातिबे आ'माल फिरिश्तों पर भी मख़फ़ी नहीं हैं तो **اللَّهُ** अलीम व ख़बीर से कैसे छुप सकती हैं । 52 : और तुम्हें क़तए मसाफ़त (रास्ता तै करने) की कुदरत देता है खुशकी में तुम पियादा और सुवार मन्ज़िलें तै करते हो और दरियाओं में कश्तियों और जहाज़ों से सफ़र करते हो वोह तुम्हें खुशकी और तरी दोनों में अस्बाबे सैर अता फ़रमाता है । 53 : या'नी कश्तियां 54 : कि हवा मुवाफ़िक़ है अचानक 55 : तेरी ने'मतों के, तुज़ पर ईमान ला कर और ख़ास तेरी इबादत कर के । 56 : और वा'दे के ख़िलाफ़ कर के कुफ़्र व मा'सियत में मुब्तला होते हैं ।

فَنَبِّئْكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾ إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ

उस वक्त हम तुम्हें बता देंगे जो तुम्हारे कौतुक (करतूत) थे⁵⁷ दुनिया की ज़िन्दगी की कहावत तो ऐसी ही है जैसे वोह पानी

أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ

कि हम ने आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन से उगने वाली चीजें घनी (ज़ियादा) हो कर निकलें जो कुछ आदमी और

وَالْأَنْعَامُ ۗ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَاتَّيَّرَتْ وَكَانَ

चौपाए खाते हैं⁵⁸ यहां तक कि जब ज़मीन ने अपना सिंगार ले लिया⁵⁹ और ख़ूब आरास्ता हो गई और उस के

أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِيرُونَ عَلَيْهَا ۗ آتَهَا أَمْرًا نَّالِيًّا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا

मालिक समझे कि येह हमारे बस में आ गई⁶⁰ हमारा हुक्म उस पर आया रात में या दिन में⁶¹ तो हम ने उसे कर दिया

حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَعْنِ بِالْأُمْسِ ۗ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ

काटी हुई गोया कल थी ही नहीं⁶² हम यूँही आयतें मुफ़स्सल बयान करते हैं गौर करने

يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَاللَّهُ يَدْعُوًا إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ ۗ وَيَهْدِي مَنْ

वालों के लिये⁶³ और **اللَّهُ** सलामती के घर की तरफ़ पुकारता है⁶⁴ और जिसे चाहे

يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٥﴾ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ ۗ

सीधी राह चलाता है⁶⁵ भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ाइद⁶⁶

57 : और उन की तुम्हें जज़ा देंगे । 58 : ग़ल्ले और फल और सब्ज़ा । 59 : ख़ूब फूली फली सर सब्ज़ो शादाब हुई 60 : कि खेतियां तय्यार हो गई फल रसीदा (तय्यार) हो गए ऐसे वक़्त 61 : या'नी अचानक हमारा अज़ाब आया ख़्वाह बिजली गिरने की शकल में या ओले बरसने या आंधी चलने की सूरत में । 62 : येह उन लोगों के हाल की एक तम्सील है जो दुनिया के शेफ़ता (आशिक) हैं और आखिरत की उन्हें कुछ परवा नहीं । इस में बहुत दिल पज़ीर तरीके पर खातिर गुर्जों किया गया है कि दुन्यवी ज़िन्दगानी उम्मीदों का सब्ज़ बाग़ है इस में उज़्र खो कर जब आदमी इस गायत पर पहुंचता है जहां उस को हुसूले मुराद का इत्मीनान हो और वोह काम्याबी के नशे में मस्त हो अचानक उस को मौत पहुंचती है और वोह तमाम ने'मतों और लज़्ज़तों से महरूम हो जाता है । क़तादा ने कहा कि दुन्या का त़लब गार जब बिल्कुल बे फ़िक्र होता है उस वक़्त उस पर अज़ाबे इलाही आता है और उस का तमाम सरो सामान जिस से उस की उम्मीदें वाबस्ता थीं ग़ारत हो जाता है । 63 : ताकि वोह नफ़्अ हासिल करें और जुल्माते शुकूको अवहाम से नजात पाएं और दुन्याए ना पाएदार की बे सबाती (ना पाएदारी) से बा ख़बर हों । 64 : दुन्या की बे सबाती बयान फ़रमाने के बा'द दारे बाक़ी (हमेशा रहने वाले घर जन्मत) की तरफ़ दा'वत दी । क़तादा ने कहा कि दारुस्सलाम जन्मत है, येह **اللَّهُ** का कमाले रहमतो करम है कि अपने बन्दों को जन्मत की दा'वत दी । 65 : सीधी राह दीने इस्लाम है । बुख़ारी की हदीस में है : **عَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमत में फ़िरिश्ते हाज़िर हुए, आप ख़्वाब में थे, उन में से बा'ज ने कहा कि आप ख़्वाब में हैं और बा'जों ने कहा कि आंखें ख़्वाब में हैं दिल बेदार है । बा'ज कहने लगे कि इन की कोई मिसाल बयान करो तो उन्होंने ने कहा : जिस तरह किसी शख़्स ने एक मकान बनाया और उस में तरह तरह की ने'मतें मुह्य्या कीं और एक बुलाने वाले को भेजा कि लोगों को बुलाए, जिस ने उस बुलाने वाले की इताअत की उस मकान में दाख़िल हुवा और उन ने'मतों को खाया पिया और जिस ने बुलाने वाले की इताअत न की वोह न मकान में दाख़िल हो सका न कुछ खा सका, फिर वोह कहने लगे कि इस मिसाल की त़त्बीक़ करो कि समझ में आए । त़त्बीक़ येह है कि मकान जन्मत है दाई मुहम्मद (**عَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**) हैं जिस ने इन की इताअत की उस ने **اللَّهُ** की इताअत की जिस ने इन की ना फ़रमानी की उस ने **اللَّهُ** की ना फ़रमानी की । 66 : भलाई वालों से **اللَّهُ** के फ़रमां बरदार बन्दे मोमिनीन मुराद हैं और येह जो

وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهُهُمْ قَتْرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ

और उन के मुंह पर न चढ़ेगी सियाही और न ख़वारी⁶⁷ वोही जन्नत वाले हैं वोह

فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِسِئْلَهَا ۖ وَ

उस में हमेशा रहेंगे और जिन्होंने ने बुराइयां कमाई⁶⁸ तो बुराई का बदला उसी जैसा⁶⁹ और

تَرَهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۖ كَانِبًا أَغْشَيْتَ وُجُوهُهُمْ

उन पर जिल्लत चढ़ेगी उन्हें **अल्लाह** से बचाने वाला कोई न होगा गोया उन के चेहरों पर अंधेरी

قِطْعًا مِّنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧﴾

रात के टुकड़े चढ़ा दिये हैं⁷⁰ वोही दोख़ वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَبِعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ

और जिस दिन हम उन सब को उठाएंगे⁷¹ फिर मुश्रिकों से फ़रमाएंगे अपनी जगह रहो तुम

وَشُرَكَاءُكُمْ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ

और तुम्हारे शरीक⁷² तो हम उन्हें मुसलमानों से जुदा कर देंगे और उन के शरीक उन से कहेंगे तुम हमें

تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾ فَكُفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا

कब पूजते थे⁷³ तो **अल्लाह** गवाह काफ़ी है हम में और तुम में कि हमें

عِبَادَتِكُمْ لَغْفِيلِينَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُو أَكْلُ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ وَرُدُّوْا

तुम्हारे पूजने की ख़बर भी न थी यहां हर जान जांच लेगी जो आगे भेजा⁷⁴ और **अल्लाह** की तर्फ़

फ़रमाया कि उन के लिये भलाई है। इस भलाई से जन्नत मुराद है और ज़ियादत इस पर दीदारे इलाही है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है

कि जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल होने के बा'द **अल्लाह** तआला फ़रमाएगा क्या तुम चाहते हो कि तुम पर और ज़ियादा इनायत करूं वोह

अर्ज़ करेंगे या रब ! क्या तू ने हमारे चेहरे सफ़ेद नहीं किये, क्या तू ने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमाया, क्या तू ने हमें दोख़ से नजात नहीं

दी। हज़ूर ने फ़रमाया : फिर पर्दा उठा दिया जाएगा तो दीदारे इलाही उन्हें हर ने'मत से ज़ियादा प्यारा होगा। सिहाह की बहुत हदीसों यह

साबित करती हैं कि ज़ियादत से आयत में दीदारे इलाही मुराद है। 67 : कि येह बात जहन्नम वालों के लिये है। 68 : या'नी कुफ़्र व मआसी

में मुब्तला हुए। 69 : ऐसा नहीं कि जैसे नेकियों का सवाब दस गुना और सात सो गुना किया जाता है ऐसे ही बदियों का अज़ाब भी बढ़ा

दिया जाए बल्कि जितनी बदी होगी उतना ही अज़ाब किया जाएगा। 70 : येह हाल होगा उन की रू सियाही का, खुदा की पनाह। 71 : और

तमाम ख़ल्क को मौक़िफ़े हिसाब में जम्अ करेंगे 72 : या'नी वोह बुत जिन को तुम पूजते थे। 73 : रोज़े क़ियामत एक साअत ऐसी शिहत की

होगी कि बुत अपने पुजारियों के पूजा का इन्कार कर देंगे और **अल्लाह** की कसम खा कर कहेंगे कि हम न सुनते थे, न देखते थे, न जानते

थे, न समझते थे कि तुम हमें पूजते हो, इस पर बुत परस्त कहेंगे कि **अल्लाह** की कसम ! हम तुम्हीं को पूजते थे तो बुत कहेंगे : 74 : या'नी

इस मौक़िफ़ में सब को मा'लूम हो जाएगा कि इन्होंने न पहले जो अमल किये थे वोह कैसे थे अच्छे या बुरे मुज़िर या मुफ़ीद।

إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمْ الْحَقِّ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۚ قُلْ مَنْ

फेरे जाएंगे जो उन का सच्चा मौला है और उन की सारी बनावटें⁷⁵ उन से गुम हो जाएंगी⁷⁶ तुम फरमाओ तुम्हें

يَرْزُقْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمْ مَنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَ

कौन रोजी देता है आस्मान और ज़मीन से⁷⁷ या कौन मालिक है कान और आंखों का⁷⁸ और

مَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدِيرُ

कौन निकालता है ज़िन्दा को मुर्दे से और निकालता है मुर्दा को ज़िन्दा से⁷⁹ और कौन तमाम कामों की

الْأُمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۚ فَذَلِكُمُ اللَّهُ

तदबीर करता है तो अब कहेंगे कि **اللَّهُ**⁸⁰ तो तुम फरमाओ तो क्यूं नहीं डरते⁸¹ तो यह **اللَّهُ** है

رَبُّكُمْ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعَدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ ۚ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ ۚ

तुम्हारा सच्चा रब⁸² फिर हक के बाद क्या है मगर गुमराही⁸³ फिर कहां फिरे जाते हो

كَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَاتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ

यूंही साबित हो चुकी है तेरे रब की बात फ़ासिकों पर⁸⁴ तो वोह ईमान नहीं लाएंगे

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدُو الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ قُلْ اللَّهُ

तुम फरमाओ तुम्हारे शरीकों में⁸⁵ कोई ऐसा है कि अव्वल बनाए फिर फ़ना के बाद दोबारा बनाए⁸⁶ तुम फरमाओ **اللَّهُ**

يَبْدُو الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ ۚ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ

अव्वल बनाता है फिर फ़ना के बाद दोबारा बनाएगा तो कहां औंधे जाते हो⁸⁷ तुम फरमाओ तुम्हारे शरीकों में

75 : बुतों को खुदा का शरीक बताना और मा'बूद ठहराना । 76 : और बातिल व बे हकीकत साबित होंगी । 77 : आस्मान से मींह बरसा कर और ज़मीन से सब्जा उगा कर । 78 : और येह हवास तुम्हें किस ने दिये हैं ? किस ने येह अजाइब तुम्हें इनायत किये हैं ? कौन इन्हें मुद्दतों महफूज रखता है ? 79 : इन्सान को नुत्फे से और नुत्फे को इन्सान से, परिन्द को अन्दे से और अन्दे को परिन्दे से, मोमिन को काफिर से और काफिर को मोमिन से, अ़ालिम को जाहिल से और जाहिल को अ़ालिम से । 80 : और उस की कुदरते कामिला का ए'तिराफ़ करेंगे और इस के सिवा कुछ चारह न होगा । 81 : उस के अज़ाब से और क्यूं बुतों को पूजते और इन को मा'बूद बनाते हो बा वुजूदे कि वोह कुछ कुदरत नहीं रखते । 82 : जिस की ऐसी कुदरते कामिला है 83 : या'नी जब ऐसे बराहीने वाजेहा और दलाइले क़द्इय्या से साबित हो गया कि मुस्तहिके इबादत सिर्फ़ **اللَّهُ** है तो मा सिवा उस के सब बातिल व ज़लाल (गुमराही) है और जब तुम ने उस की कुदरत को पहचान लिया और उस की कारसाज़ी का ए'तिराफ़ कर लिया तो 84 : जो कुफ़्र में रासिख़ हो गए और रब की बात से मुराद या क़जाए इलाही है या **اللَّهُ** तआला का इशाद **لَا مُسْلِمِينَ جَهَنَّمَ إِلَّا يَوْمَ الْقِيَامِ** (वेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा.....) 85 : जिन्हें ऐ मुशिरकीन ! तुम मा'बूद ठहराते हो । 86 : इस का जवाब ज़ाहिर है कि कोई ऐसा नहीं क्यूं कि मुशिरकीन भी येह जानते हैं कि पैदा करने वाला **اللَّهُ** ही है, लिहाज़ा ऐ मुस्तफ़ा **مَلِكُ الْمَلَكَاتِ وَرَسُولُهُ** ! 87 : और ऐसी रोशन दलीलें काइम होने के बाद राह रास्त से मुन्हरिफ़ होते हो ।

مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ ۖ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ ۗ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى

कोई ऐसा है कि हक़ की राह दिखाए⁸⁸ तुम फ़रमाओ कि **اللَّهُ** हक़ की राह दिखाता है तो क्या जो हक़ राह

الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ مَنْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يَهْدِي ۚ فَمَا لَكُمْ

दिखाए उस के हुक़्म पर चलना चाहिये या उस के जो खुद ही राह न पाए जब तक राह न दिखाया जाए⁸⁹ तो तुम्हें क्या हुआ

كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي

कैसा हुक़्म लगाते हो और उन⁹⁰ में अक्सर नहीं चलते मगर गुमान पर⁹¹ बेशक गुमान हक़

مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَمَا كَانَ هَذَا

का कुछ काम नहीं देता बेशक **اللَّهُ** उन के कामों को जानता है और इस कुरआन की

الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ

येह शान नहीं कि कोई अपनी तरफ़ से बना ले बे **اللَّهُ** के उतारे⁹² हां वोह अगली किताबों की

يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَمْ

तस्दीक है⁹³ और लौह में जो कुछ लिखा है सब की तफ़्सील है इस में कुछ शक नहीं परवर्दगारे आलम की तरफ़ से है क्या

يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَعْظَمْتُمْ

येह कहते हैं⁹⁴ कि उन्होंने ने इसे बना लिया है तुम फ़रमाओ⁹⁵ तो इस जैसी एक सूत ले आओ और **اللَّهُ** को छोड़ कर जो मिल सकें

مَنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلْ كَذَّبُوا بِآلَمِ يُحِيطُوا

सब को बुला लाओ⁹⁶ अगर तुम सच्चे हो बल्कि इसे झुटलाया जिस के इल्म पर काबू

88 : हुज्जतें और दलाइल काइम कर के, रसूल भेज कर, किताबें नाज़िल फ़रमा कर, मुकल्लिफ़ीन को अक़लो नज़र अता फ़रमा कर, इस का वाज़ेह जवाब येह है कि कोई नहीं तो ऐ हबीब ! **89** : जैसे कि तुम्हारे बुत हैं कि किसी जगह जा नहीं सकते जब तक कि कोई उठा ले जाने वाला उन्हें उठा कर ले न जाए और न किसी चीज़ की हक़ीक़त को समझें और राहे हक़ को पहचानें बिगैर इस के कि **اللَّهُ** तआला उन्हें ज़िन्दगी, अक़ल और इदराक दे तो जब उन की मजबूरी का येह आलम है तो वोह दूसरों को क्या राह बता सकें ! ऐसों को मा'बूद बनाना, उन का मुतीअ बनना कितना बातिल और बेहूदा है । **90** : मुशिरकीन **91** : जिस की उन के पास कोई दलील नहीं, न उस की सिद्दहत का ज़म्मो यक़ीन, शक में पड़े हुए हैं और येह गुमान करते हैं कि पहले लोग भी बुत परस्ती करते थे उन्होंने ने कुछ तो समझा होगा । **92** : कुफ़फ़ारे मक्का ने येह वहम किया था कि कुरआने करीम सय्यिदे आलम **عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने खुद बना लिया है, इस आयत में उन का येह वहम दफ़्फ़ फ़रमाया गया कि कुरआने करीम ऐसी किताब ही नहीं जिस की निस्बत तरहुद हो सके, इस की मिसाल बनाने से सारी मख़्लूक़ आजिज़ है तो यक़ीन वोह **اللَّهُ** की नाज़िल फ़रमाई हुई किताब है । **93** : तौरैत व इन्ज़ील वगैरा की **94** : कुफ़फ़ार सय्यिदे आलम **عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की निस्बत **95** : कि अगर तुम्हारा येह खयाल है तो तुम भी अ़रब हो, फ़साहतो बलागत के दा'वेदार हो, दुन्या में कोई इन्सान ऐसा नहीं है जिस के कलाम के मुक़ाबिल कलाम बनाने को तुम ना मुम्किन समझते हो, अगर तुम्हारे गुमान में येह इन्सानी कलाम है **96** : और उन से मददें लो और सब मिल कर कुरआन जैसी एक सूत तो बनाओ ।

بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَا تَرْهَمُ تَأْوِيلُهُ ۖ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَانظُرْ

न पाया⁹⁷ और अभी उन्होंने ने इस का अन्जाम नहीं देखा है⁹⁸ ऐसे ही उन से अगलों ने झुटलाया था⁹⁹ तो देखो

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ (۳۹) وَمِنْهُمْ مَّنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَا

ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुवा¹⁰⁰ और उन¹⁰¹ में कोई इस¹⁰² पर ईमान लाता है और उन में कोई इस पर

يُؤْمِنُ بِهِ ۖ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ۝ (۴۰) وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي

ईमान नहीं लाता है और तुम्हारा रब मुफ़्फ़िदों (फ़साद करने वालों) को ख़ूब जानता है¹⁰³ और अगर वोह तुम्हें झुटलाए¹⁰⁴ तो फ़रमा दो कि मेरे

عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلِكُمْ ۚ أَنْتُمْ بَرِيءُونَ مِنَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّنَّا

लिये मेरी करनी और तुम्हारे लिये तुम्हारी करनी¹⁰⁵ तुम्हें मेरे काम से अलका (तअल्लुक) नहीं और मुझे तुम्हारे काम

تَعْمَلُونَ ۝ (۴۱) وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۖ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ

से तअल्लुक नहीं¹⁰⁶ और उन में कोई वोह है जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं¹⁰⁷ तो क्या तुम बहरों को सुना दोगे अगर्चे

كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ۝ (۴۲) وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ ۖ أَفَأَنْتَ تَهْدِي

उन्हें अक़ल न हो¹⁰⁸ और उन में कोई तुम्हारी तरफ़ तकता है¹⁰⁹ क्या तुम अन्धों को

الْعَمَىٰ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ۝ (۴۳) إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَ

राह दिखा दोगे अगर्चे वोह न सूझें (न देख सकें) बेशक **अल्लाह** लोगों पर कुछ जुल्म नहीं करता¹¹⁰

لَكِنَّ النَّاسَ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ (۴۴) وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَانُوا لَمْ يَلْبَثُوا

हां लोग ही अपनी जानों पर जुल्म करते हैं¹¹¹ और जिस दिन उन्हें उठाएगा¹¹² गोया दुन्या में न रहे थे

97 : या'नी कुरआने पाक को समझने और जानने के बिगैर उन्हीं ने इस की तक्ज़ीब की और येह कमाले जहल है कि किसी शै को जाने बिगैर उस का इन्कार किया जाए । कुरआने करीम का ऐसे उलूम पर मुश्तमिल होना जिन का मुद्दइयाने इल्मो ख़िरद (इल्मो अक़ल के दा'वेदार) इहाता न कर सकें इस किताब की अज़मतो जलालत ज़ाहिर करता है तो ऐसी आ'ला उलूम वाली किताब को मानना चाहिये था न कि इस का इन्कार करना 98 : या'नी उस अज़ाब को जिस की कुरआने पाक में वर्दें हैं । 99 : इनाद से अपने रसूलों को बिगैर इस के कि उन के मो'जिज़ात और आयात देख कर नज़र व तदब्बुर से काम लेते । 100 : और पहली उम्मतें अपने अम्बिया को झुटला कर कैसे कैसे अज़ाबों में मुब्तला हुई तो ऐ सय्यिदे अम्बिया ! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) आप की तक्ज़ीब करने वालों को डरना चाहिये । 101 : अहले मक्का 102 : नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ या कुरआने करीम 103 : जो इनाद से ईमान नहीं लाते और कुफ़र पर मुसिर रहते हैं । 104 : ऐ मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! और उन की राह पर आने और हक़ व हिदायत क़बूल करने की उम्मीद मुन्क़तअ हो जाए 105 : हर एक अपने अमल की जज़ा पाएगा 106 : किसी के अमल पर दूसरा माखूज़ (गिरिफ़्तार) न होगा जो पकड़ा जाएगा खुद अपने अमल पर पकड़ा जाएगा, येह फ़रमाना बतौर जज़ (तम्बीह) के है कि तुम नसीहत नहीं मानते और हिदायत क़बूल नहीं करते तो इस का ववाल खुद तुम पर होगा किसी दूसरे का इस से ज़र नहीं । 107 : और आप से कुरआने पाक और अहकामे दीन सुनते हैं और बुग़ज़ो अ़दावत की वजह से दिल में जगह नहीं देते और क़बूल नहीं करते तो येह सुनना बेकार है और वोह हिदायत से नफ़अ न पाने में बहरों की मिसल हैं । 108 : और वोह न ह्वास से काम लें न अक़ल से । 109 : और दलाइले सिद्क और ए'लामे नुबुव्वत को देखता है लेकिन तस्दीक नहीं करता और इस देखने से नतीजा नहीं निकालता, फ़ाएदा नहीं उठाता, दिल की बीनाई से महरूम और बातिन का अन्धा है । 110 : बल्कि उन्हें

إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۖ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ

मगर इस दिन की एक घड़ी¹¹³ आपस में पहचान करेंगे¹¹⁴ पूरे घाटे में रहे वोह

كَذَّبُوا بِإِيقَاعِ اللَّهِ وَكَانُوا مُهْتَدِينَ ۚ وَإِمَانُ رَبِّكَ بَعْضُ

जिन्होंने ने **अल्लाह** से मिलने को झुटलाया और हिदायत पर न थे¹¹⁵ और अगर हम तुम्हें दिखा दें कुछ¹¹⁶ उस में से

الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ تَتَوَفَّيْبِكَ فَأَلَيْنَا مَرْجِعَهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا

जो उन्हें वा'दा दे रहे हैं¹¹⁷ या तुम्हें पहले ही अपने पास बुला लें¹¹⁸ बहर हाल उन्हें हमारी तरफ पलट कर आना है फिर **अल्लाह** गवाह है¹¹⁹ उन

يَفْعَلُونَ ۚ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ

के कामों पर और हर उम्मत में एक रसूल हुवा¹²⁰ जब उन का रसूल उन के पास आता¹²¹ उन पर

بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۚ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ

इन्साफ़ का फैसला कर दिया जाता¹²² और उन पर जुल्म न होता और कहते हैं येह वा'दा कब आएगा अगर तुम

صَادِقِينَ ۚ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ

सच्चे हो¹²³ तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के भले बुरे का जाती इख्तियार नहीं रखता मगर जो **अल्लाह**

हिदायत और राह पाने के तमाम सामान अता फ़रमाता है और रोशन दलाइल काइम फ़रमाता है । 111 : कि इन दलाइल में गौर नहीं करते

और हक़ वाज़ेह हो जाने के बा वुजूद खुद गुमराही में मुब्तला होते हैं । 112 : कब्रों से मौक़िफ़े हिसाब (हिसाबो किताब की जगह) में हाज़िर

करने के लिये तो उस रोज़ की हैबतो वहशत से येह हाल होगा कि वोह दुनिया में रहने की मुदत को बहुत थोड़ा समझेंगे और येह खयाल करेंगे

कि 113 : और इस की वजह येह है कि चूँकि कुफ़र ने तलबे दुनिया में उभ्रें जाएअ कर दें और **अल्लाह** की ताअत जो आज कारआमद होती

बजा न लाए तो उन की जिन्दगानी का वक़्त उन के काम न आया इस लिये वोह इसे बहुत ही कम समझेंगे । 114 : कब्रों से निकलते वक़्त

तो एक दूसरे को पहचानेंगे जैसा दुनिया में पहचानते थे फिर रोज़े क़ियामत के अहवाल और दहशत नाक मनाज़िर देख कर येह मा'रिफ़त बाक़ी

न रहेगी और एक कौल येह है कि रोज़े क़ियामत दम बदम हाल बदलेंगे, कभी ऐसा हाल होगा कि एक दूसरे को पहचानेंगे, कभी ऐसा कि

न पहचानेंगे और जब पहचानेंगे तो कहेंगे : 115 : जो उन्हें घाटे से बचाती । 116 : अज़ाब 117 : दुनिया ही में आप के ज़मानए हयात में तो

वोह मुलाहज़ा कीजिये 118 : तो आख़िरत में आप को उन का अज़ाब दिखाएंगे । इस आयत से साबित हुवा कि **अल्लाह** तआला अपने

रसूल **عَلَىٰ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को काफ़िरों के बहुत से अज़ाब और उन की ज़िल्लतो रुस्वाइयां आप की हयाते दुनिया ही में आप को दिखाएगा चुनान्चे

बदर वग़ैरा में दिखाई गई और जो अज़ाब काफ़िरों के लिये ब सबबे कुफ़र व तक़ीब के आख़िरत में मुकरर फ़रमाया है वोह आख़िरत में

दिखाएगा । 119 : मुत्तलअ है, अज़ाब देने वाला है 120 : जो उन्हें दिने हक़ की दा'वत देता और ताअत व ईमान का हुक्म करता । 121 :

और अहक़ामे इलाही की तब्तीग़ करता तो कुछ लोग ईमान लाते और कुछ तक़ीब करते और मुन्किर हो जाते तो 122 : कि रसूल को और

उन पर ईमान लाने वालों को नजात दी जाती और तक़ीब करने वालों को अज़ाब से हलाक कर दिया जाता । आयत की तफ़सीर में दूसरा कौल

येह है कि इस में आख़िरत का बयान है और मा'ना येह है कि रोज़े क़ियामत हर उम्मत के लिये एक रसूल होगा जिस की तरफ़ वोह मन्सूब

होगी जब वोह रसूल मौक़िफ़ (हिसाबो किताब की जगह) में आएगा और मोमिन व काफ़िर पर शहादत देगा तब उन में फैसला किया जाएगा

कि मोमिनों को नजात होगी और काफ़िर गिरिफ़्तारे अज़ाब होंगे । 123 शाने नुज़ूल : जब आयत "إِمَانُ رَبِّكَ" में अज़ाब की वईद दी गई

तो काफ़िरों ने बराहे सरकशी येह कहा कि ऐ मुहम्मद ! (عَلَىٰ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) जिस अज़ाब का आप वा'दा देते हैं वोह कब आएगा ? उस में क्या

ताख़ीर है ? उस अज़ाब को जल्द लाइये, इस पर येह आयत नाज़िल हुई ।

اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۖ إِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۚ وَ

चाहे¹²⁴ हर गुरौह का एक वा'दा है¹²⁵ जब उन का वा'दा आया तो एक घड़ी न पीछे हटें

لَا يَسْتَقْدِمُونَ ۚ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَيْتُمْ عَذَابَ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا

न आगे बढ़ें तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर उस का अज़ाब¹²⁶ तुम पर रात को आए¹²⁷ या दिन को¹²⁸

مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْجُرْمُونَ ۝ ٥٠ أَمْ إِذَا مَا وَقَعَ أَمْنْتُمْ بِهِ ۖ

तो उस में वोह कौन सी चीज़ है कि मुजरिमों को जिस की जल्दी है तो क्या जब¹²⁹ हो पड़ेगा उस वक़्त इस का यकीन करोगे¹³⁰

أَلَنْ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝ ٥١ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ادْعُوا

क्या अब मानते हो पहले तो¹³¹ इस की जल्दी मचा रहे थे फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा हमेशा

عَذَابَ الْخُلْدِ ۖ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ ٥٢

का अज़ाब चखो तुम्हें कुछ और बदला न मिलेगा मगर वोही जो कमाते थे¹³²

وَيَسْتَبِئُونَكَ أَحَقُّ هُوَ ۖ قُلْ إِي وَرَأَيْتُمْ إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ

और तुम से पूछते हैं क्या वोह¹³³ हक़ है तुम फ़रमाओ हां मेरे रब की क़सम बेशक वोह ज़रूर हक़ है और तुम कुछ थका

بِعُجْرَيْنِ ۚ وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ

न सकोगे¹³⁴ और अगर हर ज़ालिम जान ज़मीन में जो कुछ है¹³⁵ सब की मालिक होती ज़रूर अपनी जान छुड़ाने में

بِهِ ۖ وَأَسْرُ وَالنَّدَامَةَ لَمَّآ رَأُوا الْعَذَابَ ۚ وَقَضَىٰ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ

देती¹³⁶ और दिल में चुपके चुपके पशेमान हुए जब अज़ाब देखा और उन में इन्साफ़ से फैसला कर दिया गया

وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ ٥٣ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ

और उन पर जुल्म न होगा सुन लो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और ज़मीन में¹³⁷ सुन लो

124 : या'नी दुश्मनों पर अज़ाब नाज़िल करना और दोस्तों की मदद करना और उन्हें ग़लबा देना ये सब ब मशिय्यते इलाही है और मशिय्यते इलाही में 125 : उस के हलाक व अज़ाब का एक वक़्त मुअय्यन है, लौहे महफूज़ में मक्तूब है । 126 : जिस की तुम जल्दी करते हो 127 : जब तुम गाफ़िल पड़े सोते हो । 128 : जब तुम मआश के कामों में मशगूल हो । 129 : वोह अज़ाब तुम पर नाज़िल 130 : उस वक़्त का यकीन कुछ फ़ाएदा न देगा और कहा जाएगा : 131 : ब तरीके तक्ज़ीब व इस्तिहज़ा 132 : या'नी दुनिया में जो अमल करते थे और कुफ़्र व तक्ज़ीबे अम्बिया में मसरूफ़ रहते थे उसी का बदला । 133 : बअस और अज़ाब जिस के नाज़िल होने की आप ने हमें ख़बर दी 134 : या'नी वोह अज़ाब तुम्हें ज़रूर पहुंचेगा 135 : मालो मताअ ख़जाना व दफ़ीना 136 : और रोज़े क़ियामत उस को अपनी रिहाई के लिये फ़िदया कर डालती, मगर येह फ़िदया कबूल नहीं और तमाम दुनिया की दौलत ख़र्च कर के भी अब रिहाई मुम्किन नहीं, जब क़ियामत में येह मन्ज़र पेश आया और कुफ़र की उम्मीदें टूटें 137 : तो काफ़िर किसी चीज़ का मालिक ही नहीं बल्कि वोह खुद भी **अल्लाह** का मम्लूक है, इस का फ़िदया देना मुम्किन ही नहीं ।

إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيِي وَ

बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच्चा है मगर उन में अक्सर को खबर नहीं वोह जिलाता और

يُيْتُّ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِّنْ

मारता है और उसी की तरफ़ फिरोगे ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत

رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ ۗ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

आई¹³⁸ और दिलों की सिहहत और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا ۗ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا

तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़ल और उसी की रहमत और इसी पर चाहिये कि खुशी करें¹³⁹ वोह उन के सब

يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِّن رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ

धन दौलत से बेहतर है तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वोह जो **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये रिज़क़ उतारा उस में तुम ने

مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا ۗ قُلْ أَلَا إِنَّ اللَّهَ أَدْنَىٰ لَّكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تُفْتَرُونَ ﴿٥٩﴾ وَ

अपनी तरफ़ से ह़राम व ह़लाल ठहरा लिया¹⁴⁰ तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** ने इस की तुम्हें इजाज़त दी या **अल्लाह** पर झूट बांधते हो¹⁴¹ और

مَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّ اللَّهَ

क्या गुमान है उन का जो **अल्लाह** पर झूट बांधते हैं कि क़ियामत में उन का क्या हाल होगा बेशक **अल्लाह**

138 : इस आयत में कुरआने करीम के आने और इस के मौइज़त व शिफ़ा व हिदायत व रहमत होने का बयान है कि येह किताब इन फ़वाइदे अज़ीमा की जामेअ है। मौइज़त के मा'ना हैं वोह चीज़ जो इन्सान को मरग़ूब की तरफ़ बुलाए और ख़तरे से बचाए। ख़लील ने कहा कि मौइज़त नेकी की नसीहत करना है जिस से दिल में नरमी पैदा हो। शिफ़ा से मुराद येह है कि कुरआने पाक क़ल्बी अमराज़ को दूर करता है। दिल के अमराज़, अख़्लाके ज़मीमा, अक़ाइदे फ़ासिदा और जहालते मोहलिका हैं, कुरआने पाक इन तमाम अमराज़ को दूर करता है। कुरआने करीम की सिफ़त में हिदायत भी फ़रमाया क्यूं कि वोह गुमराही से बचाता और राहे हक़ दिखाता है और ईमान वालों के लिये रहमत इस लिये फ़रमाया कि वोही इस से फ़ाएदा उठाते हैं। **139** : फ़रह : किसी प्यारी और महबूब चीज़ के पाने से दिल को जो लज़्ज़त हासिल होती है उस को फ़रह कहते हैं। मा'ना येह हैं कि ईमान वालों को **अल्लाह** के फ़ज़लो रहमत पर खुश होना चाहिये कि उस ने इन्हें मवाइज़ और शिफ़ाए सुदूर और ईमान के साथ दिल की राहत व सुकून अता फ़रमाए। हज़रते इब्ने अब्बास व हसन व क़तादा (رضي الله تعالى عنهم) ने कहा कि **अल्लाह** के फ़ज़ल से इस्लाम और उस की रहमत से कुरआन मुराद है। एक क़ौल येह है कि फ़ज़लुल्लाह से कुरआन और रहमत से अहादीस मुराद हैं। **140** : जैसे कि अहले जाहलियत ने बहीरा साइबा वगैरा को अपनी तरफ़ से ह़राम क़रार दे लिया था। **141** मरसला : इस आयत से साबित हुवा कि किसी चीज़ को अपनी तरफ़ से ह़लाल या ह़राम करना मन्मूअ और खुदा पर इफ़्तिरा है (**अल्लाह** की पनाह) आज कल बहुत लोग इस में मुब्तला हैं मन्मूआत को ह़लाल कहते हैं और मुबाहात को ह़राम, बा'ज सूद को ह़लाल करने पर मुसिर हैं, बा'ज तस्वीरों को, बा'ज खेल तमाशों को, बा'ज औरतों की बे क़ैदियों और बे पर्दगियों को, बा'ज भूक हड़ताल को जो खुदकुशी है मुबाह समझते हैं और ह़लाल ठहराते हैं और बा'ज लोग ह़लाल चीज़ों को ह़राम ठहराने पर मुसिर हैं जैसे महफ़िले मीलाद को, फ़ातिहा को, ग़्यारहवीं को और दीगर तरीकाहाए ईसाले सवाब को, बा'ज मीलाद शरीफ़ व फ़ातिहा व तोशे की शीरीनी व तबरक को जो सब ह़लाल व तथ्यिब चीज़ें हैं ना जाइज़ व मन्मूअ बताते हैं, इसी को कुरआने पाक ने खुदा पर इफ़्तिरा करना बताया है।

لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٠﴾ وَمَا تَكُونُ

लोगों पर फ़ज़ल करता है¹⁴² मगर अक्सर लोग शुक़ नहीं करते और तुम किसी

فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا

काम में हो¹⁴³ और उस की तरफ़ से कुछ कुरआन पढ़ो और तुम लोग¹⁴⁴ कोई काम करो हम

عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ

तुम पर गवाह होते हैं जब तुम उस को शुरू करते हो और तुम्हारे रब से

مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا

ज़रा भर कोई चीज़ ग़ाइब नहीं ज़मीन में न आस्मान में और न इस से छोटी और न इस

أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦١﴾ إِلَّا أَنْ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ

से बड़ी कोई चीज़ जो एक रोशन किताब में न हो¹⁴⁵ सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ खौफ़ है

وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ

न कुछ ग़म¹⁴⁶ वोह जो ईमान लाए और परहेज़ गारी करते हैं उन्हें खुश ख़बरी है

فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۗ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۗ ذَلِكَ هُوَ

दुनिया की ज़िन्दगी में¹⁴⁷ और आख़िरत में अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं¹⁴⁸ येही

عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! 142 : कि रसूल भेजता है किताबें नाज़िल फ़रमाता है और हलाल व ह़राम से बा ख़बर फ़रमाता है । 143 : ऐ हबीबे अकरम

144 : ऐ मुसल्मानो ! 145 : किताबे मुबीन से लौहे महफूज़ मुराद है । 146 : वली की अस्ल विला से है जो कुर्ब व नुसरत के मा'ना में है ।

वलियुल्लाह वोह है जो फ़राइज़ से कुर्बे इलाही हासिल करे और इताअते इलाही में मशगूल रहे और उस का दिल नूरे जलाले इलाही की

मा'रिफ़त में मुस्तरक़ हो, जब देखे दलाइले कुदरते इलाही को देखे और जब सुने अल्लाह की आयतें ही सुने और जब बोले तो अपने रब

की सना ही के साथ बोले और जब हरकत करे ताअते इलाही में हरकत करे और जब कोशिश करे उसी अम्र में कोशिश करे जो ज़रीअए कुर्बे

इलाही हो, अल्लाह के ज़िक्र से न थके और चश्मे दिल से खुदा के सिवा किसी ग़ैर को न देखे येह सिफ़त औलिया की है, बन्दा जब इस

हाल पर पहुंचता है तो अल्लाह उस का वली व नासिर और मुईनो मददगार होता है । मुतकल्लिमीन कहते हैं : वली वोह है जो ए'तिकादे

सहीह मन्बी बर दलील रखता हो और आ'माले सालिहा शरीअत के मुताबिक़ बजा लाता हो । बा'ज़ आरिफ़ीन ने फ़रमाया कि विलायत नाम

है कुर्बे इलाही और हमेशा अल्लाह के साथ मशगूल रहने का, जब बन्दा इस मक़ाम पर पहुंचता है तो उस को किसी चीज़ का ख़ौफ़ नहीं रहता

और न किसी शै के फ़ौत होने का ग़म होता है । हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने फ़रमाया कि वली वोह है जिस को देखने से अल्लाह याद

आए । येही त़बरी की हदीस में भी है । इब्ने ज़ैद ने कहा कि वली वोही है जिस में वोह सिफ़त हो जो इस आयत में मज़कूर है

“الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ” या'नी ईमान व तक्वा दोनों का जामेअ हो । बा'ज़ इलमा ने फ़रमाया कि वली वोह है जो ख़ालिस अल्लाह के लिये

महब्वत करे । औलिया की येह सिफ़त अहादीसे कसीरा में वारिद हुई है । बा'ज़ अक़ाबिर ने फ़रमाया : वली वोह है जो ताअत से कुर्बे इलाही की

त़लब करते हैं और अल्लाह तआला करामत से उन की कारसाजी फ़रमाता है या वोह जिन की हिदायत का बुरहान के साथ अल्लाह कफ़ील

हो और वोह उस का हक्के बन्दगी अदा करने और उस की ख़ल्फ़ पर रहम करने के लिये वक्फ़ हो गए । येह मआनी और इबारात अगर्चे जुदागाना

हैं लेकिन इन में इख़िलाफ़ कुछ भी नहीं है, क्यूं कि हर एक इबारात में वली की एक एक सिफ़त बयान कर दी गई है जिसे कुर्बे इलाही हासिल होता

है येह तमाम सिफ़त उस में होते हैं, विलायत के दरजे और मरातिब में हर एक ब क़दर अपने दरजे के फ़ज़्लो शरफ़ रखता है 147 : इस खुश ख़बरी

الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٢٣﴾ وَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا هُوَ

वोही है¹⁵⁰ के लिये है **अल्लाह** शरीक इज़्जत सारी बेशक इज़्जत सारी **अल्लाह** के लिये है¹⁴⁹ और तुम उन की बातों का ग़म न करो

السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٥﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مِنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ط

¹⁵¹ और जितने ज़मीनों में हैं और जितने आस्मानों में हैं ही की मिल्क हैं जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीनों में हैं सुनता जानता है सुन लो बेशक **अल्लाह**

وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ط إِنَّ يَتَّبِعُونَ إِلَّا

और काहे के पीछे जा रहे हैं¹⁵² वोह जो **अल्लाह** के सिवा शरीक पुकार रहे हैं वोह तो पीछे नहीं जाते मगर

الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٦﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ

वोही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई ¹⁵³ वोही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई गुमान के और वोह तो नहीं मगर अटकलें दौड़ाते (अन्दाज़े करते)

لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ط إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ

कि इस में चैन पाओ¹⁵⁴ और दिन बनाया तुम्हारी आंखें खोलता¹⁵⁵ बेशक इस में निशानियां हैं सुनने

يَسْمَعُونَ ﴿٢٧﴾ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ ط هُوَ الْغَنِيُّ ط لَهُ مَا فِي

वोही बे नियाज़ है उसी का है जो कुछ वालों के लिये¹⁵⁶ बोले **अल्लाह** ने अपने लिये औलाद बनाई¹⁵⁷ पाकी उस को

से या तो वोह मुराद है जो परहेज़ गार ईमानदारों को कुरआने करीम में जा ब जा दी गई है या बेहतरीन ख़्वाब मुराद है जो मोमिन देखता है

या उस के लिये देखा जाता है जैसा कि कसीर अहदादीस में वारिद हुवा है और इस का सबब येह है कि वली का क़ल्ब और उस की रूह दोनों

जिक्रे इलाही में मुस्तगरक रहते हैं तो वक्ते ख़्वाब उस के दिल में सिवाए जिक्रो मा'रिफते इलाही के और कुछ नहीं होता। इस लिये वली जब

ख़्वाब देखता है तो उस का ख़्वाब हक़ और **अल्लाह** तआला की तरफ़ से उस के हक़ में बिशारत होती है। बा'ज' मुफ़स्सरीन ने इस बिशारत

से दुन्या की नेकनामी भी मुराद ली है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से अर्ज़ किया गया : उस शख्स के

लिये क्या इर्शाद फ़रमाते हैं जो नेक अमल करता है और लोग उस की ता'रीफ़ करते हैं। फ़रमाया : येह मोमिन के लिये बिशारते आज़िला

है। उलमा फ़रमाते हैं कि येह बिशारते आज़िला रिज़ाए इलाही और **अल्लाह** की महब्वत फ़रमाने और खल्क के दिल में महब्वत डाल देने

की दलील है, जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि उस को ज़मीन में मक्बूल कर दिया जाता है। क़तादा ने कहा कि मलाएका वक्ते मौत

अल्लाह तआला की तरफ़ से बिशारत देते हैं। अता का कौल है कि दुन्या की बिशारत तो वोह है जो मलाएका वक्ते मौत सुनाते हैं और

आख़िरत की बिशारत वोह है जो मोमिन को जान निकलने के बा'द सुनाई जाती है कि इस से **अल्लाह** राज़ी है। 148 : उस के वा'दे ख़िलाफ़

नहीं हो सकते जो उस ने अपनी किताब में और अपने रसूलों की ज़बान से अपने औलिया और अपने फ़रमां बरदार बन्दों से फ़रमाए।

149 : इस में सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तस्कीन फ़रमाई गई कि कुफ़फ़ारे ना बकार जो आप की तक्ज़ीब करते हैं और आप के ख़िलाफ़

बुरे बुरे मश्वरे करते हैं आप उस का कुछ ग़म न फ़रमाएं। 150 : वोह जिसे चाहे इज़्जत दे और जिसे चाहे ज़लील करे। ऐ सय्यिदे

अम्बिया ! वोह आप का नासिर व मददगार है उस ने आप को और आप के सदक़े में आप के फ़रमां बरदारों को इज़्जत दी, जैसा कि दूसरी

आयत में फ़रमाया कि **अल्लाह** के लिये इज़्जत है और उस के रसूल के लिये और ईमानदारों के लिये। 151 : सब उस के मम्लूक हैं उस

के तहते कुदरतो इख़्तियार और मम्लूक रब नहीं हो सकता, इस लिये कि **अल्लाह** के सिवा हर एक की परस्तिश बातिल है, येह तोहीद की

एक उम्दा बुरहान है। 152 : या'नी किस दलील का इत्तिबाअ करते हैं। मुराद येह है कि उन के पास कोई दलील नहीं। 153 : और बे दलील

महज़ गुमाने फ़ासिद से अपने बातिल मा'बूदों को खुदा का शरीक ठहराते हैं, इस के बा'द **अल्लाह** तआला अपनी कुदरत व ने'मत का इज़्हार

फ़रमाता है। 154 : और आराम कर के दिन की तकान दूर करो। 155 : रोशन ताकि तुम अपने हवाइज (हाजात) व अस्बाबे मआश का सर

अन्जाम कर सको। 156 : जो सुनें और समझें कि जिस ने इन चीजों को पैदा किया वोही मा'बूद है उस का कोई शरीक नहीं, इस के बा'द

मुशिरकीन का एक मक़ूला जिक्र फ़रमाता है 157 : कुफ़फ़ार का येह कलिमा निहायत क़बीह और इन्तिहा दरजे के जहल का है, **अल्लाह**

तआला इस का रद फ़रमाता है।

السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ۗ

आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में¹⁵⁸ तुम्हारे पास इस की कोई भी सनद नहीं

أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾ قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى

क्या **اللَّهُ** पर वोह बात बताते हो जिस का तुम्हें इल्म नहीं तुम फरमाओ वोह जो **اللَّهُ** पर

اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْدِحُونَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ

झूट बांधते हैं उन का भला न होगा दुनिया में कुछ बरत लेना (फ़ाएदा उठाना) है फिर उन्हें हमारी तरफ़ वापस आना फिर

نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾ وَاتُّلَّ عَلَيْهِمْ

हम उन्हें सख़्त अज़ाब चखाएंगे बदला उन के कुफ़्र का और उन्हें नूह की ख़बर

نَبَأِ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ إِن كَانَ كِبَرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِي

पढ़ कर सुनाओ जब उस ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम पर शाक़ (ना गवार) गुज़रा है मेरा खड़ा होना¹⁵⁹

وَتَذَكِيرِي فَأْتِ اللَّهَ فَعَلَ اللَّهُ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ

और **اللَّهُ** की निशानियां याद दिलाना¹⁶⁰ तो मैं ने **اللَّهُ** ही पर भरोसा किया¹⁶¹ तो मिल कर काम करो

وَشُرَكَاءِكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرَكُمْ عَلَيْكُمْ عُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا

और अपने झूटे मा'बूदों समेत अपना काम पक्का कर लो फिर तुम्हारे काम में तुम पर कुछ गुन्जलक (उल्लंघन व पोशीदगी) न रहे फिर जो हो सके मेरा कर लो और

تَنْظُرُونَ ﴿٧١﴾ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتِكُمْ مِّنْ أَجْرٍ ۗ إِن أَجْرِي إِلَّا

मुझे मोहलत न दो¹⁶² फिर अगर तुम मुंह फेरो¹⁶³ तो मैं तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता¹⁶⁴ मेरा अन्न तो नहीं मगर

158 : यहां मुश्रिकीन के इस मक़ूले (**اللَّهُ** ने अपने लिये औलाद बनाई) के तीन रद फ़रमाए पहला रद तो कलिमा "سُبْحٰنَهُ" में है जिस में बताया गया कि उस की ज़ात वलद से मुनज़ज़ा है कि वोह वाहिदे हकीकी है। दूसरा रद "هُوَ الْعَلِيُّ" फ़रमाने में है कि वोह तमाम ख़ल्क से बे नियाज़ है तो औलाद उस के लिये कैसे हो सकती है? औलाद तो या कमज़ोर चाहता है जो उस से कुव्वत हासिल करे या फ़कीर चाहता है जो उस से मदद ले या ज़लील चाहता है जो उस के ज़रीए से इज़ज़त हासिल करे ग़रज़ जो चाहता है वोह हाजत रखता है तो जो ग़नी हो या ग़ैर मोहताज हो उस के लिये वलद किस तरह हो सकता है, नीज़ वलद वालिद का एक जुज़्ब होता है तो वालिद होना मुश्किल होने को मुस्तलज़िम और मुश्किल होना मुश्किल होने को और हर मुश्किल ग़ैर का मोहताज है तो हादिस हुवा, लिहाज़ा मुहाल हुवा कि ग़नी क़दीम के वलद हो। तीसरा रद "لَهُ مَسَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَسَا فِي الْأَرْضِ" में है कि तमाम ख़ल्क उस की मम्लूक है और मम्लूक होना बेता होने के साथ नहीं जम्अ होता, लिहाज़ा इन में से कोई उस की औलाद नहीं हो सकता। **159** : और मुदते दराज़ तक तुम में ठहरना **160** : और इस पर तुम ने मेरे क़त्ल करने और निकाल देने का इरादा किया है **161** : और अपना मुआमला उस वाहिदे لَهُ لِشَرِيكَ لَهُ के सिपुर्द किया। **162** : मुझे कुछ परवाह नहीं है, हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلٰوَةُ وَالسَّلَام का येह कलाम ब त्रीके ता'जीज़ (आजिज़ कर देने के लिये) है, मुदआ येह है कि मुझे अपने क़वी व कादिल परवर्दगार पर कामिल भरोसा है तुम और तुम्हारे बे इख़्तियार मा'बूद मुझे कुछ भी ज़रर नहीं पहुंचा सकते। **163** : मेरी नसीहत से **164** : जिस के फ़ौत होने का मुझे अप्सोस हो।

عَلَى اللَّهِ وَأَمَرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ السُّلَيْبِينَ ﴿٤٢﴾ فَكَذَّبُوهُ فَجَعِلْنَاهُ

अल्लाह पर¹⁶⁵ और मुझे हुक्म है कि मैं मुसलमानों से हूँ तो उन्होंने ने उसे¹⁶⁶ झुटलाया तो हम ने उसे और

مَنْ مَعَهُ فِي الْفُلِكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ وَأَعْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا

जो उस के साथ कश्ती में थे उन को नजात दी और उन्हें हम ने नाइब किया¹⁶⁷ और जिन्होंने ने हमारी आयतें झुटलाई उन को

بِآيَاتِنَا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَدْرِبِينَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ

हम ने डुबो दिया तो देखो डराए हुआ का अन्जाम कैसा हुवा फिर इस के बाद और

رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا يَؤْمِنُونَهَا

रसूल¹⁶⁸ हम ने उन की कौमों की तरफ भेजे तो वोह उन के पास रोशन दलीलें लाए तो वोह ऐसे न थे कि ईमान लाते उस पर

كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ط كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَى قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ﴿٤٤﴾ ثُمَّ

जिसे पहले झुटला चुके थे हम यूही मोहर लगा देते हैं सरकशों के दिलों पर फिर

بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَى وَهَارُونَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ بِآيَاتِنَا

उन के बाद हम ने मूसा और हारून को फिरऔन और उस के दरबारियों की तरफ अपनी निशानियां दे कर भेजा

فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُجْرِمِينَ ﴿٤٥﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ

तो उन्होंने ने तकब्बुर किया और वोह मुजरिम लोग थे तो जब उन के पास हमारी तरफ से

عِنْدَنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا السِّحْرُ مُبِينٌ ﴿٤٦﴾ قَالَ مُوسَى أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ

हक़ आया¹⁶⁹ बोले येह तो जरूर खुला जादू है मूसा ने कहा क्या हक़ की निस्बत ऐसा कहते हो

لَسَاءَ جَاءَكُمْ ط أَسِحْرٌ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّحَرُونَ ﴿٤٧﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا

जब वोह तुम्हारे पास आया क्या येह जादू है¹⁷⁰ और जादूगर मुराद को नहीं पहुंचते बोले¹⁷¹ क्या तुम हमारे पास

لِتَلْفِتَنَا عِبَادًا وَجَدْنَا عَلَيْهِ إِبَاءً نَا وَتَكُونُ لَكُمْ الْكِبْرِيَاءُ فِي

इस लिये आए हो कि हमें उस¹⁷² से फेर दो जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया और ज़मीन में तुम्हीं दोनों

165 : वोही मुझे जजा देगा, मुद्दा येह है कि मेरा वा'जो नसीहत खास अल्लाह के लिये है किसी दुन्यवी गरज से नहीं । 166 : या'नी हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को 167 : और हलाक होने वालों के बाद ज़मीन में साकिन किया । 168 : हूद, सालेह, इब्राहीम, लूत, शूऐब वगैरहम عَلَيْهِمُ السَّلَام । 169 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام وَالسَّلَام के वासिते से और फिरऔनियों ने पहचान लिया कि येह हक़ है अल्लाह की तरफ से है तो बराहे नफसानिय्यत 170 : हरगिज़ नहीं 171 : फिरऔनी हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से 172 : दीनो मिल्लत और बुत परस्ती व फिरऔन परस्ती

الْأَرْضِ ۖ وَمَا حُنَّ لَكُمْ يَا مَعْشَرَ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَّا لِقَاءِ رَبِّكُمْ وَأَنْتُمْ مُقْتَدِرُونَ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ اسْتَوِي

की बढ़ाई रहे और हम तुम पर ईमान लाने के नहीं और फिरऔन¹⁷³ बोला हर जादूगर

بِكُلِّ سِحْرٍ عَلَيْهِمْ ۖ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوْمَا

इल्म वाले को मेरे पास ले आओ फिर जब जादूगर आए उन से मूसा ने कहा डालो जो

أَنْتُمْ مُلْقُونَ ۖ فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُمْ بِهِ السَّحَرُ

तुम्हें डालना है¹⁷⁴ फिर जब उन्होंने ने डाला मूसा ने कहा यह जो तुम लाए यह जादू है¹⁷⁵

إِنَّ اللَّهَ سَابِغُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٤٩﴾ وَيُحِقُّ

अब **اللَّهُ** उसे बातिल कर देगा **اللَّهُ** मुफ़िदों का काम नहीं बनाता और **اللَّهُ** अपनी

اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾ فَمَا آمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّةٌ

बातों से¹⁷⁶ हक़ को हक़ कर दिखाता है पड़े बुरा मानें मुजरिम तो मूसा पर ईमान न लाए मगर उस की क़ौम की औलाद से

مِّنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ ۖ وَإِنَّ

कुछ लोग¹⁷⁷ फिरऔन और उस के दरबारियों से डरते हुए कि कहीं उन्हें¹⁷⁸ हटने पर मजबूर न कर दें और बेशक

فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّهُ لَمِنَ السُّرِفِينَ ﴿٥١﴾ وَقَالَ

फ़िरऔन ज़मीन में सर उठाने वाला था और बेशक वोह हद से गुज़र गया¹⁷⁹ और मूसा

173 : सरकश व मुतकब्बर ने चाहा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ के मो'जिज़े का मुक़ाबला बातिल से करे और दुनिया को इस मुग़ालते में डाले कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ के मो'जिज़ात (مَعَادُ اللَّهِ) जादू की किसम से हैं इस लिये वोह 174 : रस्से शहतीर वगैरा और जो तुम्हें जादू करना है करो। येह आप ने इस लिये फ़रमाया कि हक़ व बातिल ज़ाहिर हो जाए और जादू के करिशमे जो वोह करने वाले हैं उन का फ़साद वाज़ेह हो। 175 : न कि वोह आयाते इलाहिय्यह जिन को फ़िरऔन ने अपनी बे ईमानी से जादू बताया। 176 : या'नी अपने हुक्म अपनी क़ज़ा व क़दर और अपने इस वा'दे से कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ को जादूगरों पर ग़ालिब करेगा। 177 : इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की तसल्ली है कि आप अपनी उम्मत के ईमान लाने का निहायत एहतियाम फ़रमाते थे और उन के ए'राज़ करने से मग़मूम होते थे आप की तस्कीन फ़रमाई गई कि बा वुजूदे कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ने इतना बड़ा मो'जिज़ा दिखाया फिर भी थोड़े लोगों ने ईमान क़बूल किया, ऐसी हालतें अम्बिया को पेश आती रही हैं आप अपनी उम्मत के ए'राज़ से रन्जीदा न हों "مِنْ قَوْمِهِ" में जो ज़मीर है वोह या तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ की तरफ़ राजेअ है। इस सूत में क़ौम की जुरिय्यत से बनी इसराईल मुराद होंगे जिन की औलाद मिस्र में आप के साथ थी और एक क़ौल येह है कि इस से वोह लोग मुराद हैं जो फ़िरऔन के क़त्ल से बच रहे थे क्यूं कि जब बनी इसराईल के लडके व हुक्मे फ़िरऔन क़त्ल किये जाते थे तो बनी इसराईल की बा'ज औरतें जो क़ौमे फ़िरऔन की औरतों के साथ कुछ रस्मो राह रखती थीं वोह जब बच्चा जनतीं तो उस की जान के अन्देशे से वोह बच्चा फ़िरऔनी क़ौम की औरतों को दे डालतीं, ऐसे बच्चे जो फ़िरऔनियों के घरों में पले थे उस रोज़ हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ पर ईमान ले आए जिस दिन **اللَّهُ** तआला ने आप को जादूगरों पर ग़लबा दिया था और एक क़ौल येह है कि येह ज़मीर फ़िरऔन की तरफ़ राजेअ है और क़ौमे फ़िरऔन की जुरिय्यत (औलाद) मुराद है। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि वोह क़ौमे फ़िरऔन के थोड़े लोग थे जो ईमान लाए। 178 : दीन से 179 : कि बन्दा हो कर खुदाई का मुद्दई हुवा।

مُوسَى يَقُومُ إِنْ كُنْتُمْ بِاللهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ

ने कहा ऐ मेरी कौम अगर तुम **अल्लाह** पर ईमान लाए तो उसी पर भरोसा करो¹⁸⁰ अगर इस्लाम

مُسْلِمِينَ ﴿٨٣﴾ فَقَالُوا عَلَى اللهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلْقَوْمِ

रखते हो बोले हम ने **अल्लाह** ही पर भरोसा किया इलाही हम को जालिम लोगों के लिये

الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾ وَأَوْحَيْنَا

आज्माइश न बना¹⁸¹ और अपनी रहमत फरमा कर हमें काफ़िरो से नजात दे¹⁸² और हम ने

إِلَى مُوسَى وَأَخِيهِ أَنْ تَبِوَا الْقَوْمَ مَكْمًا بِبِصْرٍ يَبُوتًا وَأَجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ

मूसा और उस के भाई को वह्य भेजी कि मिस्र में अपनी कौम के लिये मकानात बनाओ और अपने घरों को नमाज़ की जगह

قِبْلَةً وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ ۖ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا

करो¹⁸³ और नमाज़ काइम रखो और मुसल्मानों को खुश खबरी सुना¹⁸⁴ और मूसा ने अर्ज़ की ऐ रब हमारे

إِنَّكَ اتَّيْتَنَا بِرُحْمَتِكَ وَأَنْتَ الْغَنِيُّ الْغَنِيُّ وَأَنْتَ الْغَنِيُّ الْغَنِيُّ وَأَنْتَ الْغَنِيُّ الْغَنِيُّ

तू ने फिराउन और उस के सरदारों को आराइश¹⁸⁵ और माल दुन्या की जिन्दगी में दिये ऐ रब हमारे

لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيلِكَ ۚ رَبَّنَا اطِّسْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَأَشْدُدْ عَلَى قُلُوبِهِمْ

इस लिये कि तेरी राह से बहकावें ऐ रब हमारे इन के माल बरबाद कर दे¹⁸⁶ और इन के दिल सख्त कर दे

فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٨﴾ قَالَ قَدْ أُجِيبْتُ

कि ईमान न लाएं जब तक दर्दनाक अज़ाब न देख लें¹⁸⁷ फरमाया तुम दोनों की दुआ

دَعْوَتِكُمْ فَأَسْتَقِيمُوا وَلَا تَتَّبِعَنَّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

क़बूल हुई¹⁸⁸ तो साबित क़दम रहे¹⁸⁹ और नादानों की राह न चलो¹⁹⁰

180 : वोह अपने फ़रमां बरदारों की मदद करता और दुश्मनों को हलाक फ़रमाता है। **मस्अला** : इस आयत से साबित हुवा कि **अल्लाह** पर भरोसा करना कमाले ईमान का मुक़तज़ा है **181** : या'नी उन्हें हम पर ग़ालिब न कर ताकि वोह येह गुमान न करें कि वोह हक़ पर हैं। **182** : और उन के जुल्मो सितम से बचा। **183** : कि क़िब्ला रू हो, हज़रते मूसा व हारून **عليهما السلام** का क़िब्ला का'बा शरीफ़ था और इब्दिदा में बनी इसराइल को येही हुस्म था कि वोह घरों में छुप कर नमाज़ पढ़ें ताकि फ़िराउनियों के शर व ईजा से महफूज़ रहें। **184** : मददे इलाही की और जन्नत की **185** : उम्दा लिबास नफ़ीस फ़र्श कीमती ज़ेवर तरह तरह के सामान **186** : कि वोह तेरी ने'मतों पर बजाए शुक़ के जरी हो कर मा'सियत करते हैं। हज़रते मूसा **عليه السلام** की येह दुआ क़बूल हुई और फ़िराउनियों के दिरहमो दीनार वग़ैरा पथर हो कर रह गए हत्ता कि फल और खाने की चीजें भी और येह उन नव निशानियों में से एक है जो हज़रते मूसा **عليه السلام** को दी गई थीं। **187** : जब हज़रते मूसा **عليه السلام** उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हो गए तब आप ने उन के लिये येह दुआ की और ऐसा ही हुवा कि वोह ग़क़ होने के वक्त तक ईमान न लाए। **मस्अला** : इस से मा'लूम हुवा कि किसी शख़्स के लिये कुफ़र पर मरने की दुआ करना कुफ़र नहीं है। **188** : दुआ की निस्वत हज़रते मूसा

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَّبَعَهُمْ فَرَعُونُ وَجُودُهُ بَعِيًا وَ

और हम बनी इसराईल को दरिया पार ले गए तो फिरऔन और उस के लश्करों ने उन का पीछा किया सरकशी और

عَدُوًّا حَتَّىٰ إِذَا آدْرَاكُهُ الْعُرْقُ قَالَ أَمَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي

जुल्म से यहां तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया¹⁹¹ बोला मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मा'बूद नहीं सिवा उस के

أَمَنْتُ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ٩٠ وَاللَّنَّ وَقَدْ

जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए और मैं मुसलमान हूँ¹⁹² क्या अब¹⁹³ और

عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ٩١ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ

पहले से ना फ़रमान रहा और तू फ़सादी था¹⁹⁴ आज हम तेरी लाश को उतरा दें (बाकी रखें)गे

لِتَكُونَ لِمَنْ خَلْفَكَ آيَةً ٥ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنِ آيَتِنَا

कि तू अपने पिछलों के लिये निशानी हो¹⁹⁵ और बेशक लोग हमारी आयतों से

لَغَفْلُونَ ٩٢ ٥ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مَبْوَأَ صِدْقٍ وَرَأَوْا قَوْمَهُمْ

गाफ़िल हैं और बेशक हम ने बनी इसराईल को इज्जत की जगह दी¹⁹⁶ और उन्हें

مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ٦ فَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ٥ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي

सुथरी रोज़ी अत्ता की तो इख़िलाफ़ में न पड़े¹⁹⁷ मगर इल्म आने के बा'द¹⁹⁸ बेशक तुम्हारा रब कियामत

व हारून عَلَيْهِ السَّلَام दोनों की तरफ़ की गई बा वुजूदे कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام दुआ करते थे और हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام आमीन कहते थे।

इस से मा'लूम हुवा कि आमीन कहने वाला भी दुआ करने वालों में शुमार किया जाता है। मस्अला : यह भी साबित हुवा कि आमीन दुआ

है लिहाजा इस के लिये इख़फ़ा (आहिस्ता कहना) ही मुनासिब है। (मारफ) हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ और उस की मक्बूलियत

के दरमियान चालीस बरस का फ़ासिला हुवा। 189 : दा'वतो तब्लीग़ पर 190 : जो क़बूले दुआ में देर होने की हिक्मत नहीं जानते।

191 : तब फिरऔन 192 : फिरऔन ने ब तमन्नाए क़बूल ईमान का मजमून तीन मरतबा तब्कार के साथ अदा किया लेकिन यह ईमान

क़बूल न हुवा क्यूं कि मलाएका और अज़ाब के देखने के बा'द ईमान मक्बूल नहीं, अगर हालते इख़्तियार में वोह एक मरतबा भी यह

कलिमा कहता तो उस का ईमान क़बूल कर लिया जाता लेकिन उस ने वक़्त खो दिया इस लिये उस से यह कहा गया जो आयत में आगे

मज़कूर है। 193 : हालते इज्तिरार में जब कि गर्क में मुब्तला हो चुका है और जिन्दगानी की उम्मीद बाकी नहीं रही उस वक़्त ईमान लाता

है 194 : खुद गुमराह था, दूसरों को गुमराह करता था। मरवी है कि एक मरतबा हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام फिरऔन के पास एक इस्तिफ़्ता

लाए जिस का मजमून यह था कि बादशाह का क्या हुक्म है ऐसे गुलाम के हक़ में जिस ने एक शख्स के माल व ने'मत में परवरिश पाई फिर

उस की नाशुकी की और उस के हक़ का मुन्किर हो गया और अपने आप मौला होने का मुद्दई बन गया ? इस पर फिरऔन ने यह जवाब लिखा

कि जो गुलाम अपने आका की ने'मतों का इन्कार करे और उस के मुकाबिल आए उस की सज़ा यह है कि उस को दरिया में डुबो दिया जाए

(سُحْنُ اللَّهِ)। जब फिरऔन डूबने लगा तो हज़रते जिब्रील ने उस का वोही फतवा उस के सामने कर दिया और उस ने उस को पहचान लिया।

195 : उलमाए तपसीरी कहते हैं कि जब اَللّٰهُ तआला ने फिरऔन और उस की कौम को गर्क किया और मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने

अपनी कौम को उन की हलाकत की ख़बर दी तो बा'ज बनी इसराईल को शुबा रहा और उस की अज़मतो हैबत जो उन के कुल्ब में थी उस

के बाइस उन्हें उस की हलाकत का यकीन न आया, ब अग्रे इलाही दरिया ने फिरऔन की लाश साहिल पर फेंक दी, बनी इसराईल

ने उस को देख कर पहचाना 196 : इज्जत की जगह से या तो मुल्के मिस्र और फिरऔन व फिरऔनियों के अम्लाक (जाएदाद) मुराद

हैं या सर ज़मीने शाम व कुदुस व उर्दुन जो निहायत सर सब्जो शादाब और ज़रखेज़ बिलाद (शहर) हैं। 197 : बनी इसराईल जिन के

بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾ فَإِنْ كُنْتَ فِي شكِّ

के दिन उन में फैसला कर देगा जिस बात में झगड़ते थे¹⁹⁹ और ऐ सुनने वाले अगर तुझे कुछ शुबा हो

مِمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكُتُبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ

उस में जो हम ने तेरी तरफ़ उतारा²⁰⁰ तो उन से पूछ देख जो तुझ से पहले किताब पढ़ने वाले हैं²⁰¹ बेशक

جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَ مِنَ الْمُسْتَرِينَ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَكُونَنَّ

तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से हक़ आया²⁰² तो तू हरगिज़ शक वालों में न हो और हरगिज़ उन

مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونَ مِنَ الْخُسِرِينَ ﴿٩٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ

में न होना जिन्होंने ने **Allah** की आयतें झुटलाई कि तू ख़सारे वालों में हो जाएगा बेशक वोह

حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ

जिन पर तेरे रब की बात ठीक पड़ चुकी है²⁰³ ईमान न लाएंगे अगर्चे सब निशानियां उन के पास आएँ

حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾ فَلَوْ لَا كَانَتْ قَرْيَةٌ أَمَنَتْ فَتَنْقَعَهَا

जब तक दर्दनाक अज़ाब न देख लें²⁰⁴ तो हुई होती न कोई बस्ती²⁰⁵ कि ईमान लाती²⁰⁶ तो उस का ईमान

إِيْبَانَهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ ۖ لَمَّا أَمِنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِرْيِ فِي

काम आता हां यूनस की कौम जब ईमान लाए हम ने उन से रुस्वाई का अज़ाब

الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٩٨﴾ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي

दुन्या की जिन्दगी में हटा दिया और एक वक़्त तक उन्हें बरतने दिया²⁰⁷ और अगर तुम्हारा रब चाहता ज़मीन में

साथ येह वाकिआत हो चुके 198 : इल्म से मुराद यहां या तो तौरैत है जिस के मा'ना में यहूद बाहम इख़िलाफ़ करते थे या सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तशरीफ़ आवरी है कि इस से पहले तो यहूद सब आप के मुक़िर (मानने वाले) और आप की नुबुव्वत पर मुत्तफ़िक़ थे और तौरैत में जो आप की सिफ़त मज़कूर थीं उन को मानते थे लेकिन तशरीफ़ आवरी के बा'द इख़िलाफ़ करने लगे कुछ ईमान ले आए और कुछ लोगों ने हसद व अदावत से कुफ़्र किया। एक कौल येह है कि इल्म से कुरआन मुराद है। 199 : इस तरह कि ऐ सय्यिदे अम्बिया ! आप पर ईमान लाने वालों को जन्त में दाख़िल फ़रमाएगा और आप का इन्कार करने वालों को जहन्नम में अज़ाब फ़रमाएगा। 200 : ब वासिता अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के 201 : या'नी उलमाए अहले किताब मिस्ले हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्हाब के ताकि वोह तुझ को सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की नुबुव्वत का इत्मीनान दिलाएं और आप की ना'त व सिफ़त जो तौरैत में मज़कूर है वोह सुना कर शक रफ़अ (दूर) करें। फ़ाएदा : शक इन्सान के नज़्दीक किसी अम्र में दोनों तरफ़ों का बराबर होना है ख़्वाह इस तरह हो कि दोनों जानिब बराबर करीने पाए जाएँ ख़्वाह इस तरह कि किसी तरफ़ भी कोई करीना न हो। मुहक्किकीन के नज़्दीक शक अक़सामे जहल से है और जहल व शक में आम व ख़ास मुत्लक़ की निस्बत है कि हर एक शक जहल है और हर जहल शक नहीं। 202 : जो बराहीने लाइहा व आयाते वापेहा से इतना रोशन है कि इस में शक की मजाल नहीं। (غابن) 203 : या'नी वोह कौल उन पर साबित हो चुका जो लौहे महफूज़ में लिख दिया गया है और जिस की मलाएका ने ख़बर दी है कि येह लोग काफ़िर मरेंगे वोह 204 : और उस वक़्त का ईमान नाफ़ेअ नहीं। 205 : उन बस्तियों में से जिन को हम ने हलाक़ किया। 206 : और इख़्लास के साथ तौबा करती अज़ाब नाजिल होने से पहले। (मार्क) 207 : कौमे यूनस का वाकिआ येह है कि नैनवा

الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا ۖ أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٩٩﴾

जितने हैं सब के सब ईमान ले आते²⁰⁸ तो क्या तुम लोगों को ज़बर दस्ती करोगे यहां तक कि मुसलमान हो जाएं²⁰⁹

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُوْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَيَجْعَلُ الرَّجْسَ عَلَىٰ

और किसी जान की कुदरत नहीं कि ईमान ले आए मगर **ALLAH** के हुक्म से²¹⁰ और अज़ाब उन पर

الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٠﴾ قُلْ أَنْظِرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ

डालता है जिन्हें अक़ल नहीं तुम फ़रमाओ देखो²¹¹ आस्मानों और ज़मीन में क्या क्या है²¹²

وَمَا تُغْنِي الْآيَاتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠١﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ

और आयतों और रसूल उन्हें कुछ नहीं देते जिन के नसीब में ईमान नहीं तो उन्हें काहे का इन्तिज़ार है

الْأَمْثَلِ أَيَّامٍ ۚ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ

मगर उन्हीं लोगों के से दिनों का जो उन से पहले हो गुज़रे²¹³ तुम फ़रमाओ तो इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ

مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نَبَّيْنَا رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ حَقًّا

इन्तिज़ार में हूँ²¹⁴ फिर हम अपने रसूलों और ईमान वालों को नजात देंगे बात येही है हमारे

अलाका मौसिल में येह लोग रहते थे और कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला थे। **ALLAH** तआला ने हज़रते यूनस عليه السّلام والسلام को उन की तरफ़ भेजा आप ने बुत परस्ती छोड़ने और ईमान लाने का उन को हुक्म दिया। उन लोगों ने इन्कार किया, हज़रते यूनस عليه السّلام والسلام की तक़ीब की, आप ने उन्हें ब हुक्मे इलाही नुजूल अज़ाब की ख़बर दी, उन लोगों ने आपस में कहा कि हज़रते यूनस عليه السّلام والسلام ने कभी कोई बात ग़लत नहीं कही है देखो अगर वोह रात को यहां रहे जब तो कोई अन्देशा नहीं और अगर उन्हां ने रात यहां न गुज़ारी तो समझ लेना चाहिये कि अज़ाब आएगा। शब में हज़रते यूनस عليه السّلام वहां से तशरीफ़ ले गए सुब्ह को आसारे अज़ाब नुमूदार हो गए, आस्मान पर सियाह हैबत नाक अब्र आया और धूआं कसीर जम्अ हुआ, तमाम शहर पर छा गया, येह देख कर उन्हे यकीन हुआ कि अज़ाब आने वाला है तो उन्हों ने हज़रते यूनस عليه السّلام की जुस्तजू की और आप को न पाया, अब उन्हे और ज़ियादा अन्देशा हुआ तो वोह मअ अपनी औरतों बच्चों और जानवरों के जंगल को निकल गए, मोटे कपड़े पहने और तौबा व इस्लाम का इज़हार किया, शोहर से बीबी और मां से बच्चे जुदा हो गए और सब ने बारगाहे इलाही में गियां व ज़ारी शुरुअ की और कहा कि जो यूनस عليه السّلام लाए उस पर हम ईमान लाए और तौबए सादिका (सच्ची तौबा) की, जो मज़ालिम उन से हुए थे उन को दफ़अ किया, पराए माल वापस किये, हत्ता कि अगर एक पथ्थर दूसरे का किसी की बुन्याद में लग गया था तो बुन्याद उखाड़ कर पथ्थर निकाल दिया और वापस कर दिया और **ALLAH** तआला से इज़्लास के साथ मग़िफ़रत की दुआएं कीं। परवर्दगारे आलम ने उन पर रहम किया, दुआ कबूल फ़रमाई अज़ाब उठा दिया गया। यहां येह सुवाल पैदा होता है कि जब नुजूल अज़ाब के बा'द फिरऔन का ईमान और उस की तौबा कबूल न हुई तो कौमे यूनस की तौबा कबूल फ़रमाने और अज़ाब उठा देने में क्या हिक्मत है? उलमा ने इस के कई जवाब दिये हैं: एक तो येह करमे ख़ास था कौमे हज़रते यूनस के साथ। दूसरा जवाब येह है कि फिरऔन अज़ाब में मुब्तला होने के बा'द ईमान लाया जब उम्मीदे जिन्दगानी ही बाकी न रही और कौमे यूनस عليه السّلام से जब अज़ाब करीब हुआ तो वोह उस में मुब्तला होने से पहले ईमान ले आए और **ALLAH** कुलूब का जानने वाला है, इज़्लास मन्दों के सिद्को इज़्लास का उस को इल्म है। 208: या'नी ईमान लाना सआदते अज़ली पर मौकूफ़ है, ईमान वोही लाएंगे जिन के लिये तौफ़ीके इलाही मुसाइद (मददगार) हो, इस में सथियदे आलम **عَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तसल्ली है कि आप चाहते हैं कि सब ईमान ले आएँ और राहे रास्त इख़्तियार करें फिर जो ईमान से महरूम रह जाते हैं उन का आप को ग़म होता है इस का आप को ग़म न होना चाहिये क्यूं कि अज़ल से जो शक़ी है वोह ईमान न लाएगा। 209: और ईमान में ज़बर दस्ती नहीं हो सकती क्यूं कि ईमान होता है तस्दीक व इक़्ार से और ज़ब्रो इक़्ाह (ज़बर दस्ती करने) से तस्दीके कल्बी हासिल नहीं होती। 210: उस की मशिय्यत से 211: दिल की आंखों से और ग़ौर करो कि 212: जो **ALLAH** तआला की तौहीद पर दलालत करता है। 213: मिस्ल नूह व आद व समूद वग़ैरा। 214: तुम्हारी हलाकत और अज़ाब के। रबीअ बिन अनस ने कहा कि अज़ाब का ख़ौफ़ दिलाने के बा'द अगली आयत में येह बयान फ़रमाया कि जब अज़ाब वाक़ेअ होता है तो **ALLAH** तआला रसूल को और

عَلَيْنَا نَجِّحِ الْمُؤْمِنِينَ ۱۳ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّنْ

जिम्माए करम पर हक है मुसलमानों को नजात देना तुम फरमाओ ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन की तरफ से

دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ

किसी शूबे में हो तो मैं तो उसे न पूजंगा जिसे तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो²¹⁵ हां उस **अल्लाह** को पूजता हूं

الَّذِي يَتَوَفَّكُم ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۱۴ وَأَنْ أَقِمَّ

जो तुम्हारी जान निकालेगा²¹⁶ और मुझे हुक्म है कि ईमान वालों में होऊं और यह कि अपना मुंह

وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۱۵ وَلَا تَدْعُ

दीन के लिये सीधा रख सब से अलग हो कर²¹⁷ और हरगिज शिक वालों में न होना और **अल्लाह** के सिवा

مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مَنَّ

उस की बन्दगी न कर जो न तेरा भला कर सके न बुरा फिर अगर ऐसा करे तो उस वक्त तू

الظَّالِمِينَ ۱۶ وَإِنْ يَسْسَسْكَ اللَّهُ بَصِيرًا فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ

जालिमों से होगा और अगर तुझे **अल्लाह** कोई तकलीफ पहुंचाए तो उस का कोई टालने वाला नहीं उस के सिवा और अगर तेरा

يُرِدُّكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ ۖ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۗ

भला चाहे तो उस के फजल का रद करने वाला कोई नहीं²¹⁸ उसे पहुंचाता है अपने बन्दों में जिसे चाहे

وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۱۷ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ

और वोही बख़शने वाला मेहरबान है तुम फरमाओ ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ

رَبِّكُمْ ۖ فَسِنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا

से हक आया²¹⁹ तो जो राह पर आया वोह अपने भले को राह पर आया²²⁰ और जो बहका वोह अपने

يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۱۸ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَ

बुरे को बहका²²¹ और कुछ मैं तुम पर कड़ोड़ा (निगहबान) नहीं²²² और उस पर चलो जो तुम पर वह्य होती है और

उन के साथ ईमान लाने वालों को नजात अता फरमाता है । 215 : क्यूं कि वोह मख्लूक है इबादत के लाइफ़ नहीं । 216 : क्यूं कि वोह कादिर, मुख्तार, इलाहे बरहक मुस्तहिक्के इबादत है । 217 : या'नी मुख्तस मोमिन रहो 218 : वोही नफ़अ व जरर का मालिक है, तमाम काएनात उसी की मोहताज है, वोही हर चीज पर कादिर और जूदो करम वाला है, बन्दों को उस की तरफ़ राबत और उस का खौफ़ और उसी पर भरोसा और उसी पर ए'तिमाद चाहिये और नफ़अ व जरर जो कुछ भी है वोही 219 : हक से यहां कुरआन मुग़द है या इस्लाम या सय्यिदे आलम **عَلَيْهِ السَّلْوةُ وَالسَّلَام** । 220 : क्यूं कि इस का नफ़अ उसी को पहुंचेगा । 221 : क्यूं कि इस का वबाल उसी पर है । 222 : कि तुम पर जब करूं

أَصْدِرُ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ^ط وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ^ع

सब्र करो²²³ यहां तक कि **अल्लाह** हुकम फरमाए²²⁴ और वोह सब से बेहतर हुकम फरमाने वाला है²²⁵

﴿ آيَاتُهَا ١٢٣ ﴾ ﴿ ١١ سُورَةُ هُودٍ مَكِّيَّةٌ ٥٢ ﴾ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ١٠ ﴾

सूरए हूद मक्किय्या है, इस में एक सो तेईस आयतें और दस रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला¹

الرَّ كُتِبَ أُحْكِمَتْ آيَتُهُ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ^١

येह एक किताब है जिस की आयतें हिक्मत भरी हैं² फिर तफ्सील की गई³ हिक्मत वाले खबरदार की तरफ से

أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ^ط إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ^٢ وَأَنَّ

कि बन्दगी न करो मगर **अल्लाह** की बेशक मैं तुम्हारे लिये उस की तरफ से डर और खुशी सुनाने वाला हूं और येह कि

اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُغْفِرْ لَكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ

अपने रब से मुआफी मांगो फिर उस की तरफ तौबा करो तुम्हें बहुत अच्छा बरतना (फाएदा) देगा⁴ एक ठहराए

مُسَىٰ وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ^ط وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ

वा'दे तक और हर फज़ीलत वाले को⁵ उस का फज़ल पहुंचाएगा⁶ और अगर मुंह फेरो तो मैं तुम पर

223 : कुफ़र की तकज़ीब और उन की ईजा पर **224** : मुश्रीकीन से किताल करने और किताबियों से जिज़्या लेने का। **225** : कि उस के हुकम में ख़ता व ग़लत का एहतिमाल नहीं और वोह बन्दों के असरार व मख़्फ़ी हालात सब का जानने वाला है, उस का फ़ैसला दलील व गवाह का मोहताज नहीं। **1** : सूरए हूद मक्किय्या है हसन व इक्रिमा वौरहुम मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि आयत "وَأَقِمْ الصَّلَاةَ طَرَفِي الْبَهَارِ" के सिवा बाकी तमाम सूत मक्किय्या है। मक़ातिल ने कहा कि आयत "فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ" और "أَوَلَيْكَ يَوْمُنُونَ بِهِ" और "إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ" के इलावा तमाम सूत मक्की है, इस में दस रूकूअ और एक सो तेईस आयतें और एक हज़ार छ⁶ सो कलिमे और नव हज़ार पांच सो सरसठ हर्फ़ हैं। हदीस शरीफ़ में है : सहाबा ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّ اللهُ عَلَيْكَ وَسَلَّمَ हुजूर पर पीरी के आसार नुमूदार हो गए। फ़रमाया : मुझे सूरए हूद, सूरए वाक़िआ, सूरए "عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ" और सूरए "إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ" ने बूढ़ा कर दिया। (त्रयी) ग़ालिबन येह इस वजह से फ़रमाया कि इन सूतों में कियामत व बअूस व हिसाब व जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र है। **2** : जैसा कि दूसरी आयत में इशाद हुवा : "تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ"। बा'ज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि "أُحْكِمَتْ" के मा'ना येह हैं कि इन की नज़म मोहक़म व उस्तुवार की गई। इस सूत में मा'ना येह होंगे कि इस में नक्स व ख़लल राह नहीं पा सकता वोह बिनाए मोहक़म है। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कोई किताब इन की नासिख़ नहीं जैसा कि येह दूसरी किताबों और शरीअतों की नासिख़ हैं। **3** : और सूत सूत और आयत आयत जुदा जुदा ज़िक्र की गई या अ़लाहदा अ़लाहदा नाज़िल हुई या अ़काइद व अहक़ाम व मवाइज़ व किसस और ग़ैबी ख़बरें इन में ब तफ्सील बयान फ़रमाई गई **4** : उ़म्रे दराज़ और ऐशे वसीअ व रिज़्के कसीर। **फ़ाएदा** : इस से मा'लूम हुवा कि इख़लास के साथ तौबा व इस्तिफ़ार करना दराज़िये उ़म्र व कशाइशे रिज़्के के लिये बेहतर अमल है। **5** : जिस ने दुन्या में आ'माले फ़ाज़िला किये हों और उस की ताआत व हसनात ज़ियादा हों **6** : उस को जन्नत में ब क़दरे आ'माल दरजात अ़ता फ़रमाएगा। बा'ज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया : आयत के मा'ना येह हैं कि जिस ने **अल्लाह** के लिये अमल किया, **अल्लाह** तआला आयिन्दा के लिये उसे अमले नेक व ताअत की तौफ़ीक़ देता है।